بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 24
Issue - 10

राह-ए-ईमान

अक्टूबर
2022 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ)..... 4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 16.9.2022).....8
7. 11वीं राष्ट्रीय शांति सम्मेलन में विश्वव्यापी अहमदिया ख़लीफ़ा का भाषण.....12
8. प्रथम ख़लीफ़ा हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन[रजी] की जीवनी.....16
9. वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है (5).....24
10. सिलसिला अहमदिया (अर्थात अहमदियत का परिचय).....26
11. सामान्य ज्ञान.....28
12. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

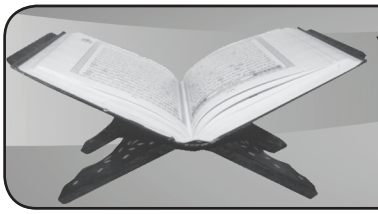

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरान की आयत का अनुवाद: "क्या इंसान ने नहीं देखा कि हमने उसे शुक्राणु से पैदा किया, फिर क्या क्रांति हुई कि वह एक खुला-खुला विवाद करने वाला बन गया। और वह हमारे बारे में बात करने लगा और अपनी रचना भूल गया। उसने कहा, "जब हड्डियां सड़ जाएंगी, तब कौन उन्हें जीवित करेगा? तुम कहो, "जिसने उन्हें पहली बार पैदा किया वह उन्हें फिर जीवित करेगा, और वह हर तरह की सृष्टि का ज्ञाता है। उसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ों में से आग बनायी। तो तुमने उनमें से कुछ को जलाना शुरू कर दिया। क्या वह जिसने आकाशों और पृथ्वी को बनाया, उनके समान नहीं बना सकता? क्यों नहीं। जबकि वह महान निर्माता (और) अनन्त ज्ञान का स्वामी है। उसका एक आदेश मात्र ही पर्याप्त है जब वह किसी बात का इरादा करे तो उसे कहता है कि "हो जा" तो तुरंत वह होना शुरू हो जाता है और पूरा होकर रहता है।" (सूरः यासीन : 78-83)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत आयशा वर्णन करती हैं कि एक ग़रीब औरत मेरे पास आई जिसने अपनी दो बच्चियां उठा रखी थीं। मैंने उसे तीन खजूरें दीं। उसने दोनों बेटियों को एक एक खजूर दे दी और एक खजूर अपने मुंह में डालने लगी लेकिन यह खजूर भी बेटियों ने उस से मांग ली। इस पर उसने इस के दो भाग किए और एक हिस्सा एक को और दूसरा दूसरी लड़की को दे दिया। मुझे उस माता के प्यार पर आश्चर्य हुआ और मैंने यह उल्लेख आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"अल्लाह तआला ने उस के इस काम के कारण उसके लिए जन्नत अनिवार्य कर दी या यह फरमाया कि: उस उपकार की वजह से उसे आग से बचा लिया।"

(बुख़ारी किताबुज़्ज़कात)

☆ ☆ ☆

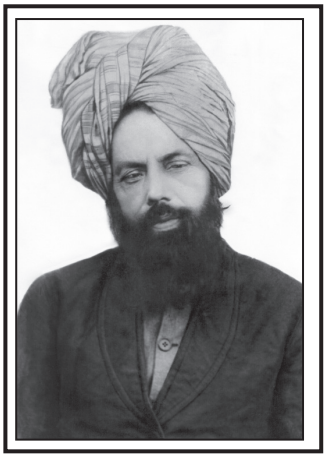

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

सबसे ज्यादा ज़रूरी चीज़ ख़ुदा के अस्तित्व पर विश्वास है

असल में लोग संदेहों में पड़ गए हैं इसलिए वे गुनाह से परहेज़ नहीं करते। हर एक में कुछ ना कुछ लापरवाही का हिस्सा रह जाता है इसी तरह ख़ुदा अब चाहता है कि यह लोग समझ लें जिस तरह नूह अलैहिस्सलाम के जमाने में उसके बेटे ने कहा था कि मैं पहाड़ की शरण में आ गया हूं इसी तरह यह लोग कहते हैं कि हम प्लेग से टीका की शरण में आ जाएंगे। सबसे अधिक आवश्यक चीज़ ख़ुदा के अस्तित्व पर विश्वास करना है। बिना उस विश्वास के कर्मों में बरकतें कदापि पैदा नहीं होतीं।

ख़ुदा तआला ने कहा कि चलो जरा हम भी चले चलें। अगर लोग आज ही तौहीद पर स्थापित हो जाएं तो आज ही यह मुसीबत दूर होने लगे। ख़ुदा इंसान के कर्मों को देखता है कि तौहीद पर वह कायम है कि नहीं बहुत से कर्म भरोसा के विपरीत तौहीद के विपरीत होते हैं चाहे वह किसी तरह से "ला इलाहा इल्लल्लाहु" कहे मगर वह उसमें झूठा होता है और यही दुराचार है। आजकल जितना माध्यमों (सांसारिक उपकरणों) पर भरोसा है उसका उदाहरण पिछले जमाने में नहीं मिलता। यद्यपि उन ज़मानों में दुराचार होता था मगर ख़ुदा का भय भी दिलों में होता था। एक समय आता है कि लोग يَامَسِيْحَ الْخَلْقِ عَدْوَانَا कहेंगे मगर उस समय वह सब नास ही रह जाएंगे जैसे: وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا (अन्नसर- 3) लेकिन ऐसे समय में विश्वास से उन्हें कोई फायदा नहीं होता। अल्लाह तआला फरमाता है : قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ (अस्सज्दः - 32/30) इससे सूर्य उदय होने की वास्तविकता भी स्पष्ट हो जाती है इसके यह अर्थ नहीं हैं कि उनकी तौबा स्वीकार न होगी बल्कि ख़ुदा अपनी कृपा से क्षमा करे तो करे उनकी तौबा कोई वास्तविकता न रखेगी यह बात ख़ुदा के अधिकार में होगी जैसे फरमाया: اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ (अर्थात सिवाय उसके जो तेरा रब चाहे। सूरह हूद- 11/109) और मोमिनों के बारे में है कि- عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ (अर्थात यह एक कटोती न किए जाने वाले प्रतिफल के तौर पर होगा। सूरह हूद- 11/109) (मलफूज़ात जिल्द- 3)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ायन

पुस्तक: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

अब हे पाठको! थोड़ा इन्साफ़ से देखो हे सत्य प्रिय लोगो! तनिक न्याय की दृष्टि से विचार करो कि ख़ुदा तआला कैसे साफ़-साफ़ तौर पर शुभ सन्देश देता है क्या आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पूर्ण विवेक के साथ अपनी नुबुव्वत पर विश्वास था और उनको महान निशान दिखलाये गए थे।

अब खुलासा उत्तर यह है कि सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन में एक नुक्त: या एक शोशा इस बात को बताने वाला नहीं पाओगे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी नुबुव्वत या पवित्र क़ुर्आन के ख़ुदा की ओर से होने के बारे में कुछ सन्देह था अपितु निश्चित और अटल बात है कि जितना पूर्ण विश्वास और पूर्ण विवेक और पूर्ण आत्मज्ञान का आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने बरकत वाले अस्तित्व के बारे में दावा किया है और फिर उसका सुबूत दिया है ऐसा कामिल सुबूत किसी अन्य मौजूद किताब में कदापि नहीं पाया जाता। فَهَلْ مَنْ يَّسْمَعُ فَيُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيَكُوْنُ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ الْمُخْلِصِيْنَ। स्पष्ट रहे कि इन्जीलों में हज़रत मसीह के कुछ कथन ऐसे वर्णन किए गए हैं जिन पर विचार करने से मालूम होता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अपनी आयु के अन्तिम दिनों में अपनी नुबुव्वत और अपने ख़ुदा से समर्पित होने के बारे में कुछ संदेहों में पड़ गए थे जैसा कि यह वाक्य कि जैसे अन्तिम समय का वाक्य था अर्थात् ईली-ईली लिमा सबकतनी जिसके मायने यह हैं कि हे मेरे ख़ुदा! हे मेरे ख़ुदा! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया दुनिया से बिलकुल रुखसत होने के समय में जो ख़ुदा के वालियों के विश्वास और ईमान के प्रकाश प्रकट होने का समय होता है आंजनाब के मुंह से निकल गया। फिर आपका यह भी तरीका था कि दुश्मनों के बुरे इरादों का अहसास कर के उस स्थान से भाग जाया करते थे हालाँकि ख़ुदा तआला से सुरक्षित रहने का वादा पा चुके थे इन दोनों बातों से सन्देह और हैरानी प्रकट है फिर आपका पूरी रात रो-रो कर ऐसे मामले के लिए जिसका बुरा अंजाम आपको पहले से मालूम था इसके अतिरिक्त क्या मायने रखता है कि प्रत्येक बात में आपको सन्देह ही सन्देह था। ये बातें केवल ईसाइयों के उस ऐतिराज़ उठाने के उद्देश्य से लिखी गई हैं अन्यथा इन प्रश्नों का उत्तर हम तो उत्तम ढंग से दे सकते हैं और अपने प्यारे मसीह के सर से जो मानवीय अशक्तताओं और कमजोरियों से अपवाद नहीं थे इन समस्त आरोपों को केवल एक मा'बूद और बेटा होने के इन्कार से एक पल में उठा सकते हैं परन्तु हमारे ईसाई भाइयों को बहुत कठिनाई का सामना होगा।

दूसरे प्रश्न का उत्तर

स्पष्ट रहे कि इन दोनों आयतों से ऐतिराज़ करने वाले का उद्देश्य चमत्कारों के न होने पर तर्क है कदापि सिद्ध नहीं होता अपितु इसके विपरीत यह सिद्ध होता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अवश्य ऐसे चमत्कार प्रकट होते रहे हैं जो एक सत्यनिष्ठ और कामिल नबी से होने चाहिए।अत: इसकी

व्याख्या नीचे के वर्णनों से भली-भांति हो जाएगी।

पहली आयत जिसका अनुवाद ऐतिराज़ करने वाले ने अपने दावे के समर्थन के लिए संबंधित इबारतों से काट कर प्रस्तुत कर दिया है उसके साथ की दूसरी आयतों के साथ जिनसे मतलब खुलता है यह है –

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

(अलअनकबूत - 51,52)

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ (अलअनकबूत - 54)

अर्थात् कहते हैं कि क्यों न उतरीं उस पर निशानियाँ कि वे निशानियाँ (जो तुम मांगते हो अर्थात् अज़ाब की निशानियाँ) वे तो ख़ुदा तआला के पास और उसके विशेष अधिकार में हैं और मैं तो केवल डराने वाला हूँ। अर्थात् मेरा काम केवल यह है कि अज़ाब के दिन से डराऊं न यह कि अपनी ओर से अज़ाब उतारूँ और फिर फ़रमाया कि क्या इन लोगों के लिए (जो स्वयं पर कोई अज़ाब की निशानी लाना चाहते हैं।) यह रहमत की निशानी पर्याप्त नहीं जो हम ने तुझ पर (हे उम्मी रसूल!) वह किताब (जो खूबियों की संग्रहीता है।) उतारी जो उन पर पढ़ी जाती है अर्थात् पवित्र क़ुर्आन जो एक दया का निशान है जिस से वास्तव में वही मतलब निकलता है जो काफ़िर लोग अज़ाब के निशानों से पूरा करना चाहते हैं क्योंकि मक्का के काफ़िर इस उदेश्य से अज़ाब का निशान मांगते थे ताकि वह उन पर आकर उन्हें अटल विश्वास तक पहुंचा दे। केवल देखने की चीज़ न रहे क्योंकि केवल अकेले देखने के निशानों में उनको धोखे की सम्भावना थी और आँख बंद होने का विचार अत: इस भ्रम और व्याकुलता के दूर करने के लिए फ़रमाया कि ऐसा ही निशान चाहते हो जो तुम्हारे अस्तित्वों पर आ जाए तो फिर अज़ाब के निशान की क्या आवश्यकता है? इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए दया का निशान पर्याप्त नहीं? अर्थात् पवित्र क़ुर्आन जो तुम्हारी आँखों को अपनी प्रकाश से भरपूर और तीव्र किरणों से चुंधिया रहा है और अपने व्यक्तिगत खूबियाँ और अपनी वास्तविकताओं और अध्यात्म ज्ञानों तथा अपनी विलक्षण विशेषताओं को इतना दिखा रहा है जिसके मुकाबले और वाद-विवाद से तुम असमर्थ रह गए हो और तुम पर और तुम्हारी क़ौम पर एक विलक्षण प्रभाव डाल रहा है और दिलों पर आकर विचित्र से विचित्र परिवर्तन दिखला रहा है। लम्बे समय के मुर्दे उससे जिंदा होते चले जाते हैं और जन्मजात अंधे जो असंख्य पीढ़ियों से अंधे ही चले आते थे आँखें खोल रहे हैं और कुफ़्र तथा नास्तिकता के भिन्न-भिन्न प्रकार के रोग इस से अच्छे होते चले जाते हैं। और पक्षपात के भयंकर कोढ़ी इस से साफ़ होते जाते हैं इस से प्रकाश मिलता है और अंधकार दूर होता है और ख़ुदा का मिलन प्राप्त होता है और उसकी निशानियाँ पैदा होती हैं। अत: तुम क्यों उस दया के निशान को छोड़कर जो हमेशा का जीवन प्रदान करता है अज़ाब और मौत का निशान मांगते हो?" (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब, पृष्ठ 4-6)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

अपने बच्चों को अभी से नैतिक मूल्य (अच्छे अखलाक़) सिखाएं

आप अगर ध्यान से देखें तो पाएंगे कि समाज में नैतिकता **(अच्छे अखलाक़)** में बहुत तेजी से गिरावट आई है, दूसरे बड़े बुजुर्गों का सम्मान तो दूर रहा बच्चे और युवा अपने बड़ों का भी यथावत सम्मान नहीं करते। वह उनका कहा नहीं मानते सिवाए उसके कि उनकी मनमर्जी की कोई बात हो, वह पलट कर उल्टा जवाब देते हैं इसी कारण बड़े बुजुर्गों ने कहना सुनना या समझाना बंद कर दिया है। कि न कुछ कहें और न सुनना पड़े लेकिन बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती इसका और भी नुकसान है। समाज में जिस तेजी से बुराइयाँ फैल रही हैं उनका निवारण या रोकथाम भी उसी तेजी से होनी चाहिए तब ही समाज का संतुलन बना रह सकता है। हुज़ूर अनवर ने इसी साल अपने एक खुतबे में हज़रत आली के ज़िक्र में फरमाया था कि– जब समाज में लोगों को भलाई का उपदेश करना और बुराई से रोकने की नसीहत करना बंद हो जाता है तो नैतिकता का पतन शुरू हो जाता है। इस दौर में वही हो रहा है।

अशिष्टता क्यों पनप रही है, इस पर गंभीर मंथन की ज़रूरत है। अशिष्टता के लिए हम युवा पीढ़ी को भी पूरी तरह दोषी नहीं ठहरा सकते। इसके लिए परिवार, सामाजिक वातावरण व पड़ोस आदि भी ज़िम्मेदार हैं। जब बच्चा पैदा होता है तो उसकी परवरिश का ज़िम्मा परिवार पर होता है। उसे जैसे संस्कार दिए जाते हैं वह बड़ा होकर उसी के अनुरूप चलता है। इसके साथ ही समाज का भी इसमें अहम योगदान होता है। इसलिए बच्चों को शुरू से अच्छे संस्कार दिए जाने चाहिए। जहां पर बच्चा गलत करे उसे बताना चाहिए। इसके लिए बच्चों को नैतिक मूल्यों के साथ अपनी संस्कृति और अपनी तालीम से भी रूबरू करवाना चाहिए। नैतिक मूल्य हमारी संस्कृति की पहचान होते हैं।

आम तौर पर जो आचार-विचार और व्यवहार हमारे समाज द्वारा मान्यता प्राप्त न हों, उन्हें अशिष्टता की संज्ञा दी जाती है। परिवार में रहकर ही बच्चे को संस्कारों, नैतिकता व शिष्टाचार के बारे में सीखना होता है। परिवार में साथ रहकर बच्चा घर के सदस्यों के साथ व्यवहार करना शुरू करता है। जिसके संपर्क में बच्चा आता है उसी का व्यावहारिक असर उस पर होता जाता है। इसमें हमारा दायित्व यह है कि शिष्ट और अशिष्ट क्या है, इसके बारे में बच्चे को ज्ञान दें। आज के समय में बच्चों में सहनशक्ति का अभाव हो रहा है। इसका कारण उनमें नैतिक मूल्यों की कमी का होना है। नैतिकता की कमी से उनमें अशिष्टता पैदा हो रही है। बच्चों में अनैतिकता का एक कारण माता-पिता के पास समय का अभाव होना भी है। इसे हम मुख्य कारण कह सकते हैं। आज किसी भी माता-पिता के पास अपने बच्चों के लिए समय नहीं है। वह तो उसके लिए धन एकत्रित करने में व्यस्त हैं। वह इस बात को नहीं समझ रहे हैं कि जिस बच्चे के लिए हम पैसे इकट्ठे कर रहे हैं वह कहां जा रहा है। अपना बहुमूल्य समय अभिभावक बच्चों को न देने के कारण भी बच्चे गलत राह पर चल पड़ते हैं।

तीन साल तक बच्चे को होश नहीं होता है, जब वह संस्कार, नैतिकता व शिष्टता के बारे में जानने योग्य होता है तो उसे स्कूल भेज दिया जाता है। उसके बाद वह ट्यूशन पढ़ने के लिए चला जाता है। जब तक वह

माता-पिता के पास आता है तो थककर सोने के लिए चला जाता है। अभिभावक कुछ पूछने की कोशिश भी करें तो वह यह कहकर टाल देता है कि अभी थक चुका हूं। दूसरी सुबह फिर वही रूटीन शुरू हो जाती है। बच्चा क्या कर रहा है, क्या पढ़ व सीख रहा है, हमें मालूम ही नहीं होता। समय के साथ वह इतना बड़ा हो जाता है कि वह संस्कारविहीन हो जाता है। शिष्टाचार की उससे कोई उम्मीद नहीं की जा सकती। आज लोगों के पास पैसा तो काफी हो गया है, लेकिन जिसके लिए कमाया वह हमारी सोच के अनुसार कुछ नहीं कर रहा। जब बच्चे को हमारे साथ की जरूरत थी तो हम पैसे के पीछे भागते रहे और दीनी तलीमात, संस्कार, शिष्टाचार व नैतिकता नाम की चीज़ उसे मिल ही नहीं पाई।

इससे पहले कि बहुत देर हो जाए अपनी औलाद की तरबियत की फिक्र करो, उन्हें बड़ों का सम्मान करना सिखाओ, सच की आदत डालो, प्यार मुहब्बत से नमाजों का पाबंद बनाओ इसके लिए पहले हमें इन बातों का पाबंद होना होगा तभी औलाद पर हमारी नसीहत का असर होगा। जब आप समाज में देखो कि कोई बच्चा गलत कर रहा है तो प्रेम से उसे समझाएँ लेकिन अनदेखा न करें, नमाज़ की, टोपी की, सलाम की नसीहत लगातार करते रहें। आज हर स्तर पर नैतिकता का जो पतन आप देख रहे हैं वह धीरे धीरे हुआ है न एक दिन में पतन हुआ और न एक दिन में सुधार होगा। इसलिए कोशिश करते रहें हिम्मत न हारें सफलता अवश्य मिलेगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं : "सावधान!!! तुम ग़ैर क़ौमों को देख कर उनकी रीस मत करो कि उन्होंने दुनिया के कामों में बड़ी उन्नति कर ली है, आओ हम भी उन्नति के क़दम पर चलें। सुनो और समझो कि वह उस ख़ुदा से पूर्णत: अनभिज्ञ और अन्जान हैं जो तुम्हें अपनी ओर बुलाता है।...मैं तुम्हें सांसारिक काम-धन्धों से नहीं रोकता। परन्तु तुम उन लोगों का अनुसरण मत करो जिन्होंने संसार को ही सब कुछ समझ रखा है। यह अत्यावश्यक है कि तुम्हारे प्रत्येक कार्य में चाहे सांसारिक हो अथवा धार्मिक ख़ुदा से शक्ति और सामर्थ्य मांगने का सिलसिला जारी रहे। परन्तु केवल सूखे होंठों से नहीं, अपितु वास्तव में तुम्हारा यह विश्वास हो कि प्रत्येक वरदान आसमान से ही आता है। तुम सन्मार्गी उसी समय बनोगे जब तुम ऐसे हो जाओ कि प्रत्येक कार्य और हर दुविधा के समय अपनी योजनाएं बनाने से पूर्व अपना दरवाज़ा बंद करो और ख़ुदा के सम्मुख गिर जाओ कि हम इस संकट में फस गए हैं अत: तू अपनी कृपा एवं दया से हमारे संकट हरण कर। उस समय रूहुल क़ुदुस (फ़रिश्ते) और ग़ैब से तुम्हारे लिए कोई मार्ग खोला जाएगा। अपने ऊपर दया करो और जो लोग ख़ुदा से पूर्णतया सम्बन्ध तोड़ चुके हैं और अपने सांसारिक संसाधनों पर आश्रित हैं यहां तक कि शक्ति माँगने के लिए मुख से इनशाअल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा) भी नहीं कहते, उनका अनुकरण मत करो।"

युगावतर हज़रत मिर्ज़ा साहिब हर प्रकार से हमें समझा चुके हैं और आज आपके ख़लीफ़ा हमारे बीच मौजूद हैं जो हर विषय पर हमारा उचित मार्गदर्शन करते हैं। अत: हमें चाहिए कि हम उन का पालन करें और अपने प्रत्येक कर्तव्य, चाहे वह घर का हो या समाज का उसका निर्वहन करें। **आचार्य फ़रहत अहमद**

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 16.9.2022 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा-ए-राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का जीवन परिचय तथा सद्गुणों का ईमान वर्धन वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु के कारनामों का वर्णन हो रहा था। इस विषय में ज़िम्मियों के अधिकारों का कुछ विवरण है। ज़िम्मी का अभिप्राय: वे लोग हैं जो इस्लामी शासन का आज्ञा पालन स्वीकार करके अपने धर्म पर स्थापित रहे तथा मुसलमानों ने उनकी रक्षा करने का दायित्व लिया। ये लोग सैन्य सेवाओं तथा ज़कात की अदायगी से वंचित थे। अत: इन ज़िम्मियों के व्यस्क, स्वस्थ तथा कार्यशील लोगों से चार दर्हम वार्षिक जिज़्या वसूल किया जाता था। बूढ़े, अपाहिज, दीन तथा मोहताज एवं बच्चे इससे बरी थे अपितु अपाहिजों तथा मोहताजों को इस्लामी बैतुल माल से सहायता दी जाती थी। इराक़ तथा शाम देश पर विजय के समय अनेक ग़ैर मुस्लिम आबादियाँ जिज़्ये की अदायगी देना स्वीकार करके ज़िम्मी बन गए थे। इनके साथ जो सन्धि पत्र लिखे गए उनमें ये धाराएँ शामिल थीं कि उनके धार्मिक स्थल एवं गिरजे तोड़े नहीं जाएँगे तथा न ही उनका कोई ऐसा क़िला गिराया जाएगा जिसमें वे आवश्यता पड़ने पर दुश्मन से मुक़ाबला करते समय ग़ैरला बन्द होते हैं। शंख बजाने तथा त्योहार के समय सलीब निकालने से रोका न जाएगा।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में एक महान, अद्वित्तीय तथा बड़ा कारनामा क़ुर्आन को जमा करना था। यमामा के युद्ध में लगभग सात सौ क़ुर्आन के हाफ़िज़ सहाबा किराम रज़ी. शहीद हुए तो हज़रत उमर रज़ी. का सीना ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन जमा करने के लिए खोल दिया। सही बुखारी में उल्लिखित विवरण के अनुसार यमामा के युद्ध के बाद हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी. को हज़रत अबू बकर रज़ी. ने बुलाया तथा उन्हें बताया कि हज़रत उमर रज़ी. ने क़ुर्आन को एकत्र करने

के विषय में सुझाव दिया है और यूँ यह काम हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी. को दिया गया। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी. कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! यदि हज़रत अबू बकर रज़ी. एक पहाड़ को उसके स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का आदेश देते तो वह मेरे लिए इस काम से सरल होता। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी. कहते हैं कि मैंने क़ुर्आन को खजूरों की शाखाओं, सफ़ेद पत्थरों तथा लोगों के सीनों से एकत्र किया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी. के द्वारा जिस क़ुर्आन करीम को एक प्रति के रूप में संकलित करवाया उसको सहीफ़ा-ए-सिद्दीक़ी कहा जाता है। यह हज़रत अबू बकर रज़ी. फिर हज़रत उमर रज़ी. और फिर उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ी. सुपुत्री उमर रज़ी. के पास रहा। सहीफ़ा-ए-सिद्दीक़ी से हज़रत उसमान रज़ी. ने कुछ प्रतियाँ करवाईं तथा वह मूल प्रति हज़रत हफ़सा रज़ी. को वापस कर दी। जब 54 हिजरी में मर्वान मदीने का हाकिम हुआ तो उसने यह नुस्खा हज़रत हफ़सा रज़ी. से लेना चाहा तो आप रज़ी. ने इंकार कर दिया। हज़रत हफ़सा रज़ी. के देहान्त के बाद मर्वान ने यह नुस्खा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी. से लेकर उसे नष्ट कर दिया।

हज़रत अली रज़ी. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला अबू बकर रज़ी. पर दया करे, उन्होंने सबसे पहले क़ुर्आन मजीद को पुस्तक के रूप में सुरक्षित किया था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि सत्य यह है कि दुनिया में कोई लेखाकृति इस निरन्तरता से उपलब्ध नहीं जिस निरन्तरता से क़ुर्आन करीम मौजूद है। फ़रमाया- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में पूरा क़ुर्आन लिखा गया था, यद्यपि वह एक पुस्तक के रूप में न था, अत: हज़रत अबू बकर रज़ी. ने क़ुर्आन करीम जमा करने का निर्देश दिया, लिखने का आदेश नहीं दिया। इस ये प्रकार शब्द स्वयं बता रहे हैं कि उस समय क़ुर्आन के पृष्ठों को एक जिल्द में एकत्र करने का सवाल था, लिखने का सवाल न था। हज़रत उसमान रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में पूरी मुस्लिम दुनिया को एक शब्दोच्चरण पर जमा कर दिया गया था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ख़लीफ़ा-ए-अव्वल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. के बाद अल्लाह तआला ने तृत्तीय ख़लीफ़ा: हज़रत उसमान रज़ी. को यह सामथ्र्य प्रदान किया तो आप रज़ी. ने अरब के शब्दकोष के अनुसार क़ुर्आन को एक ही शब्दोच्चारण पर एकत्र किया तथा उसे समस्त देशों में फैला दिया।

हज़रत अबू बकर रज़ी. की ज़ात से सम्बंधित पहली बार होने वाले कारनामों को 'अव्वलियाते अबू बकर' कहा जाता है जो ये हैं कि आप रज़ी. सबसे पहले इस्लाम लाए, मक्का में सबसे पहले अपने घर के सामने आप रज़ी. ने मस्जिद बनाई, मक्के में सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समर्थन में काफ़िरों से लड़े। सबसे पहले आप रज़ी. ने इस्लाम लाने के कारण अत्याचार एवं यातनाएं सहने वाले अनेक गुलामों तथा बांदियों को स्वतंत्र करवाया। सबसे पहले क़ुर्आन करीम को एक पुस्तक के रूप में जमा किया। सबसे पहले आप रज़ी. ने क़ुर्आन का नाम "मस्हफ़" रखा। सबसे पहले ख़लीफ़ा-ए-राशिद का पद प्राप्त किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन काल में सबसे पहले हज के अमीर नियुक्त हुए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन में सबसे पहले नमाज़ में

मुसलमानों की इमामत की। इस्लाम में सबसे पहले बैतुल माल स्थापित किया। आप रज़ी. इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा हैं जिनका मुसलमानों ने अनुदान निश्चित किया। इसी प्रकार आप रज़ी. पहले ख़लीफ़ा: हैं जिन्होंने अपना उत्तराधिकारी मनोनीत फ़रमाया। आप रज़ी. पहले ख़लीफ़ा हैं जिनकी ख़िलाफ़त की बैअत के समय उनके वालिद जीवित थे। इस्लाम में आप रज़ी. सबसे पहले व्यक्ति थे जिन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई उपाधि प्रदान की। आप रज़ी. पहले व्यक्ति थे जिनकी चार पीढ़ियों को सहाबी होने का स्तर मिला, इनके वालिद सहाबी हज़रत अबू क़हाफ़: रज़ी, हज़रत अबू बकर रज़ी. स्वयं सहाबी, इनके बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर रज़ी. और इनके पोते हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर रज़ी., ये सब सहाबी थे।

हज़रत अबू बकर रज़ी. का हुल्या हज़रत आयशा रज़ी. यूँ बयान फ़रमाती हैं कि आप रज़ी. गोरे रंग के दुबले पतले व्यक्ति थे। गालों पर मांस कम, झुकी हुई कमर, आँखें भीतर की ओर तथा माथा उँचा था। हज़रत अनस रज़ी. बयान करते हैं कि आप रज़ी. अपने बालों को खिज़ाब से रंगीन किया करते थे। आप रज़ी. ने एक पक्षी को देखा तो फ़रमाया कि काश! मैं इस पक्षी की भांति होता कि न इसका कोई हिसाब होगा तथा न ही यह उत्तर दायी है।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने अपने देहान्त के समय हज़रत आयशा रज़ी. से फ़रमाया कि हे मेरी बेटी! तू जानती है कि लोगों में से मुझे सबसे प्रिय तुम हो, मैंने अपनी अमुक स्थान की सम्पत्ति तुम्हें भेंट रूप में दी थी किन्तु तुमने उस पर क़बज़ा नहीं किया। अब मैं चाहता हूँ कि वह जगह लौटा दो ताकि वह मेरे सब बच्चों में अल्लाह की किताब के बताए हुए निर्देश के अनुसार विभाजित हो और में ख़ुदा के समक्ष कह सकूँ कि मैंने अपनी संतान में से किसी को दूसरे पर प्रमुखता नहीं दी।

जब ख़िलाफ़त का चोला अल्लाह तआला ने आप रज़ी. को पहनाया तो अगले दिन आप अपने दैनिक नियम के अनुसार कपड़ों के थान कन्धे पर रखे व्यापार करने के लिए निकले। रास्ते में हज़रत अबू उबैदा रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. से भेंट हुई, जिनके कहने पर आप रज़ी. के लिए अनुदान निश्चित कर दिया गया। वह अनुदान क्या था, आप रज़ी. को दो चादरें मिलती थीं। जब वे पुरानी हो जातीं तो वापस करके दूसरी ले लेते। यात्रा के लिए सवारी तथा ख़िलाफ़त से पहले के खर्च के अनुसार अनुदान लिया करते।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. पूरे इस्लामी विश्व के बादशाह थे किन्तु उनको क्या मिलता था, पब्लिक के रुपए की वे रक्षा करने वाले थे किन्तु स्वयं उस माल पर उनका कोई अधिकार नहीं था।

आप रज़ी. के हाथ से यदि लगाम गिर जाती तो आप रज़ी. ऊँटनी से उतरते और उसे स्वयं उठाते, पूछने पर फ़रमाते कि मुझे मेरे प्रिय सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया था कि लोगों से सवाल न करना।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार लोगों को यह कहते हुए सुना कि अबू

बकर को हम पर क्या प्रमुखता है? जैसे नमाज़ हम पढ़ते हैं और जैसे रोज़ा हम रखते हैं, वे भी ऐसा ही रखते हैं, तो आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू बकर की प्रमुखता नमाज़ रोज़े के कारण नहीं बल्कि उस नेकी के कारण है जो उनके दिल में है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक आयते क़ुर्आनी की तफ़सीर बयान फ़रमाते हुए हज़रत अबू बकर का स्तर एवं उच्च कोटि यूँ बयान फ़रमाई है कि- अल्लाह तआला ने यहाँ फ़रमाया है कि तू इबादत करता रह, जब तक कि तुझे सम्पूर्ण विश्वास का स्तर न प्राप्त हो जाए तथा सारे पर्दे एवं अंधकार के पर्दे दूर होकर यह समझ में आ जावे कि अब मैं वह नहीं हूँ जो पहले था, बल्कि अब तो नया देश, नई धरती, नया आकाश है तथा मैं भी कोई नया प्राणी हूँ। यह दूसरा जीवन वही है जिसको सूफ़ी बक़ा के नाम से याद करते हैं। जब इंसान उस स्तर पर पहुंच जाता है तो अल्लाह तआला की आत्मा का समावेश उसमें होता है, फ़रिशतों का उस पर अवतरण होता है। यही वह भेद है जिस पर ख़ुदा के पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ी. के बारे में फ़रमाया कि यदि कोई चाहे कि मृत शरीर को धरती पर चलता हुआ देखे तो वह अबू बकर को देखे और अबू बकर का स्तर उसके प्रत्यक्ष कर्मों के कारण नहीं अपितु इस बात से है जो उसके दिल में है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिनकी लुंगी नीचे लटकती है वे नरक में जाएँगे। हज़रत अबू बकर रज़ी. यह सुन कर रो पड़े क्यूँकि उनकी लुंगी भी वैसी ही थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तू उनमें से नहीं है। अभिप्राय: यह है कि धारणा का मूल प्रभाव होता है तथा प्रतिष्ठा का ध्यान रखना अति आवश्यक है।

आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सम्पूर्ण आज्ञा पालन, इश्क़े रसूल स. तथा स्वाभिमान वाली घटना है कि एक बार हज़रत अबू बकर रज़ी. रसूलुल्लाह स. के घर आए तो हज़रत आयशा रज़ी. हुज़ूर स. के साथ कुछ तेज़ बोल रही थीं। यह देख कर आप रज़ी. से न रहा गया और अपनी बेटी हज़रत आयशा रज़ी. को मारने के लिए आगे बढ़े। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह देख कर दोनों बाप बेटी के बीच आ गए तथा आयशा रज़ी. को सम्भावित मार से बचा लिया। जब हज़रत अबू बकर रज़ी. चले गए तो आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उपहास की शैली में हज़रत आयशा रज़ी. से फ़रमाया कि देखा, आज हमने तुम्हें तुम्हारे अब्बा से कैसे बचाया। कुछ दिनों पश्चात हज़रत अबू बकर रज़ी. दोबारा तशरीफ़ लाए तो हज़रत आयशा रज़ी. हंसी ख़ुशी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बात चीत कर रही थीं, यह देख कर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि तुमने मुझे अपनी लड़ाई में शामिल किया था अब अपनी ख़ुशी में भी कर लो। यह सुन कर आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हमने शामिल किया।

ख़ुत्ब: के अंत में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि शेष वर्णन इंशाअल्लाह आगे बयान होगा।

* * * * *

ख़िलाफ़त, शांति और न्याय

11वीं राष्ट्रीय शांति सम्मेलन में विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के पांचवे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब द्वारा दिया गया मुख्य भाषण

तशह्हुद तअव्वुज़ और बिस्मिल्लाह पढ़ने के बाद जमात अहमदिया के पांचवे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहब ने फ़रमाया :-

सभी प्रतिष्ठित मेहमानों अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाहे व बराकातहू (ख़ुदा की दया आशीष और शांति आप पर हो)

मैं सबसे पहले उन सभी का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं जो इस साल के शांति सम्मेलन में शामिल होने के लिए आए हैं। जैसा कि आप में से ज़्यादातर जानते हैं कि यह सम्मेलन पिछले एक दशक से सालाना हो रहा है और यह अहमदिया मुस्लिम समुदाय के कैलेंडर का एक स्थाई भाग बन चुका है।

आमतौर पर हम इस समारोह को मार्च के महीने में रखते हैं पर कई कारणों से इस साल यह कार्यक्रम नवंबर तक निलंबित किया गया। आज रात यहां पर एक राष्ट्रीय समारोह भी आयोजित किया जा रहा है जिस कारण कुछ आमंत्रित मेहमान उपस्थित होने में सक्षम नहीं हो सके।

फिर भी मैं आप सब लोगों का शुक्रगुज़ार हूं जो उपस्थित हुए हैं आपकी भागीदारी निश्चित रूप से यह साबित करती है कि आप किसी विशेष मुसलमान संप्रदाय के दृष्टिकोण से शांति के बारे में सुनना चाहते हैं क्योंकि आज की दुनिया में विश्व भर में हो रहे विवादों के बारे में बहुत कुछ कहा जा रहा है। निश्चित रूप से वर्तमान मामलों की स्थिति ज़्यादातर दुनिया के लिए भय और चिंता का एक कारण बन गई है जबकि यह बहुत अफसोस की बात है मुझे यह बात मानने में कोई झिझक नहीं है कि आज हम दुनिया में जो भी अव्यवस्था देख रहे हैं वह कुछ तथाकथित मुसलमानों की कुरीतियों के कारण हो रहा है।

किसी भी अमनपसंद मुसलमान के लिए जो अपने ईमान को समझता है उसके लिए यह बहुत ही दुख और निराशा की बात है पिछले वर्ष से एक विशेष समूह कायरतापूर्वक दुनिया में आतंक का जाल फैला रहा है और दुनिया के लिए बड़ी चिंता का कारण बन गया है मैं उस आतंकी संगठन की बात कर रहा हूं जो आमतौर पर आई. एस. आई. एस. (ISIS) या फिर आई. एस. (IS) के नाम से जाना जाता है।

इस आतंकी संगठन की क्रूरता से न केवल मुसलमान देश प्रभावित हुए हैं बल्कि यूरोप और उसकी सीमा के पार तक इनका प्रभाव गया है हम मुसलमान युवकों की चिंताजनक बड़ी संख्या देखते हैं जो कि यूरोप और विश्व के अन्य भागों से हैं जिनका कहीं न कहीं यह विश्वास है कि आई. एस. आई. एस. (ISIS) इस्लाम की सच्ची तस्वीर पेश करता है और उनका समर्थन करते हैं और इन्हीं कारणों से उन्होंने आई. एस. आई. एस. (ISIS) को मदद देने और यहां तक कि उन के हक में लड़ने का भी फैसला किया है।

UK में भी यह देखा गया है कि तक़रीबन 500 लोग ज़्यादातर नौजवान मुसलमान पहले से ही सीरिया

और इराक़ से आई. एस. आई. एस. (ISIS) की तरफ़ से लड़ने के लिए जा चुके हैं एक ऐसी लड़ाई जो कि इस्लाम के नाम पर ग़लत तरीके से लड़ी जा रही है अगर हम यूरोप के मुसलमानों के उस आंकड़े पर नज़र डालते हैं जो जिहाद के नाम पर UK से सीरिया और इराक़ गए हैं तो यह संख्या उस संख्या से अधिक है जो जर्मन और दूसरे यूरोपियन देशों से जा रहे हैं।

यूनाइटेड किंगडम के लिए बहुत खतरे और चिंता की बात है क्योंकि आई. एस. आई. एस. (ISIS) और उनके तथाकथित ख़लीफ़ा का एक ऐजेंडा और उद्देश्य बहुत ही ज़ालिमाना और खौफनाक है। ऐसा कहा जाता है कि उनका ख़लीफ़ा कहता है कि वह दुनिया से बदला लेना चाहता है और क्षेत्रों और देशों को जीतना चाहता है वह कहते हैं कि वह मुसलमानों को पूरी दुनिया का मालिक बनाना चाहता है और अगर मुसलमानों को मुसलमानों की संपत्ति और गुलाम बनाना चाहता है वह कहता है कि यह दर्द कारी कार्रवाई प्रत्येक व्यक्ति के ख़िलाफ़ लेनी चाहिए जो मुसलमानों को किसी भी तरह अपमानित करता है और शरीअत का यह कानून हर एक देश में प्रत्येक व्यक्ति पर लागू होना चाहिए।

वह चाहता है कि जो महिलाएं दूसरे धर्म या संप्रदाय से संबध रखती हैं उनसे उनके हक छीन लिए जाएं और उन पर दबाव बनाकर उनको अपनी रखैल या जबरन अपनी पत्नी बना लिया जाए। आई. एस. आई. एस. (ISIS) हर उस धर्म और संप्रदाय को नष्ट करना चाहता है जो उनकी मान्यताओं से अलग हैं और वर्तमान मुसलमान हुकूमतों को हटाने और उनकी सत्ता को ज़ब्त करने की चाहत रखता है इस प्रकार अगर यह सब सच है तो इन की रणनीति और दृष्टिकोण बहुत दूर तक पहुंच रहे हैं और उनका बुनियादी उद्देश्य दुनिया की शांति को नष्ट करना है।

यह सोचना भी बेतुका है कि आई. एस. आई. एस. (ISIS) या कोई और अन्य आतंकी समूह अंत में दुनिया को हासिल करने में सफल हो सकता है क्योंकि यह स्पष्ट है कि इनकी योजना पूरी तरह से बेहूदा है और वास्तविकता के बजाए इच्छा धारी सोच पर आधारित है फिर भी अगर इनको इनके उद्देश्यों से न रोका गया तो वह अपनी मौत से पहले नुकसान और तबाही का बड़ा कारण बन सकते हैं।

हमने बहुत सी घटनाओं में देखा है कि एक अकेला व्यक्ति किसी भी सहायता और समर्थन के बिना आतंक और तबाही पैदा कर सकता है उदाहरण के तौर पर अमेरिका में यह कुछ महीनों में किसी न किसी स्कूल में गोलाबारी की ख़बर मिलती है जहां एक अकेले व्यक्ति के क्रूर कामों के कारण दर्जनों निर्दोष बच्चे मारे जाते हैं इस प्रकार विचार करें कि एक आतंकी समूह के कारण इतनी पीड़ा और विनाश हो सकता है जो निराश और बेचैन लोगों को दुनिया के सभी भागों से एक साथ इकट्ठा कर रहा है जो इन अन्याय पूर्ण कारणों के लिए अपनी जान देने को तैयार हैं।

यह सच बात है कि इस समूह के पास केवल सहमति से काम करने वाले लोग ही नहीं हैं बल्कि यह भारी हथियारों और तूफ़ानों से लैस हैं। असल में यह बात समझ से बाहर नहीं है कि वे परमाणु हथियार तक अपनी पहुंच बना सकते हैं जैसा कि मैंने कहा है कि यह समूह हमेशा और ज़्यादा देर तक सफलता हासिल नहीं कर सकेंगे लेकिन यह भी संभव है कि थोड़े ही समय में वह कुछ क्षेत्रों पर जीत हासिल कर सकते हैं

और बड़ी तबाही मचा सकते हैं इन सब चीज़ों को मद्देनज़र रखते हुए तो यह निश्चित है कि आई. एस. आई. एस. (ISIS) या किसी अन्य समूह जिसके विचार आई. एस. आई. एस. (ISIS) की तरह हों दुनिया को खतरों की तरफ़ ले जा रहे हैं।

हक़ीक़त यह है कि यह सब इस्लाम के नाम पर किया जाता है यह सच्चे और अमनपसंद मुसलमानों को दुख और पीड़ा देता है क्योंकि इस तरह की क्रूर और अमानवीय विचारधाराओं का धर्म के साथ किसी भी प्रकार का कोई संबंध नहीं है बल्कि हर तरह से और हर स्तर पर इस्लाम की वास्तविक शिक्षा तमाम दुनिया के लिए अमन और शांति की गारंटी है अगर हम पवित्र क़ुर्आन और पैगंबर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन और चरित्र को देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि शुरुआती मुसलमानों ने किसी भी हिंसा या युद्ध में शुरुआत नहीं की अगर किसी मुसलमान ने कभी किसी युद्ध में भाग लिया भी था तो वह पूरी तरह से रक्षात्मक युद्ध था और उनका एक मात्र उद्देश्य ज़ालिमों को उनके ज़ुल्म से रोकना था और न उन्होंने कभी अपनी श्रेष्ठता का दावा किया और न कभी अन्याय किया। उन्होंने कभी भी भूमि और राष्ट्रों पर क़ब्ज़ा करने या लोगों को अधीन करने की मांग नहीं की पवित्र पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अलैहि वसल्लम का जीवन इस तथ्य पर गवाही देता है कि आपकी नबूवत के शुरुआती वर्षों में जब आप मक्का में अपनी बस्ती में थे आपने हमेशा इस्लाम की शिक्षाओं को प्यार और स्नेह के माध्यम से फैलाने की कोशिश की है।

यहां तक कि मक्का के लोगों ने न केवल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नकार दिया बल्कि आपसे बहुत ही क्रूर और निर्दयता का व्यवहार किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके मानने वालों को इस हद तक सताया गया कि खुदा की ईश वाणी के तहत आपको मक्का छोड़कर मदीना शहर जाना पड़ा हालांकि प्रवास करने के बाद भी मक्का वालों ने मुसलमानों का पीछा नहीं छोड़ा बल्कि पूरी तरह से हथियारों से लैस सेना के साथ सफर किया और मुसलमानों के ख़िलाफ़ युद्ध छेड़ दिया और यह तब था जब पहली बार अल्लाह तआला के आदेश पर मुसलमानों को आत्मरक्षा के लिए लड़ने की अनुमति दी गई थी इस तरह की लड़ाई की अनुमति क़ुर्आन मजीद के अध्याय 22 आयत 41,42 में अल्लाह तआला ने स्पष्ट रूप में फ़रमाया है कि रक्षात्मक युद्ध की अनुमति इसलिए दी गई थी क्योंकि अगर मुसलमान खुद का बचाव न करते तो पूरी दुनिया की शांति खतरे में पड़ जाती। विरोधी समूह के लोग केवल इस्लाम को ही खत्म नहीं करना चाहते थे बल्कि तथ्यात्मक रूप से सभी धर्मों को दुनिया से खत्म कर देना चाहते थे इसलिए पवित्र क़ुर्आन में आता है कि अगर यह अनुमति न दी गई होती तो कोई गिरजा घर, मंदिर, मस्जिद या कोई भी इबादत करने का स्थान सुरक्षित नहीं रहता। तो इस प्रकार मुसलमानों को लड़ाई की अनुमति न केवल इस्लाम को बचाने के लिए बल्कि धर्म को बचाने के लिए दी गई उपरोक्त आयत के आधार पर आप खुद समझ सकते हैं कि आजकल के तथाकथित मुसलमान कितने ग़लत हैं जब वह यह दावा करते हैं कि गैर मुसलमानों को मारना, उनकी संपत्ति ज़ब्त करना और गुलाम बनाना जायज़ है। वास्तविक हक़ीक़त यह है कि इस्लाम वह धर्म है जिसने हर व्यक्ति को स्वतंत्रता और हक के साथ रहने की अनुमति दी है और इस्लाम वह मज़हब है जिसने

प्रत्येक व्यक्ति को उसके विश्वास और पृष्ठभूमि की परवाह किए बगैर शांति और एकता से उसके अधिकारों के साथ रहने की ज़मानत दी है। मैंने पहले भी ज़िक्र किया है कि किस तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मानने वालों के साथ मदीना में प्रवास किया था और जिस तरीके से मुसलमानों ने खुद को स्थानीय समाज में अवशोषित किया वह एक मिसाली नमूना था कि कैसे एक नए समाज में आकर बसा जाए और एकीकृत होकर रहा जाए।

मुसलमानों के आने से पहले वहां दो मुख्य समूह थे जो मदीना शहर में रहते थे यहूदी और अरब वासी (गैर मुस्लिम अरब)। मुसलमानों के आगमन पर वहां तीन समूह बन गए। यहूदी, मुसलमान और गैर मुस्लिम अरब।

पवित्र पैगंबर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुरंत कहा कि यह ज़रूरी है कि वे सभी शांति और एकता के साथ मिल कर रहें। अत: आपने उनके बीच में शांति की एक संधि का प्रस्ताव रखा। इस संधि की शर्तों के अनुसार प्रत्येक समूह और प्रत्येक जनजाति को उनके उचित अधिकार दिए गए सभी दलों के जीवन और धन की ज़मानत दी गई और पहले से मौजूद विभिन्न कबीलों के रिवाजों को सम्मान भी दिया गया। इस बात पर भी सहमति हुई कि यदि कोई व्यक्ति मक्का से हानि या उपद्रव के इरादे से आता है तो उसे पनाह नहीं दी जाएगी और न ही किसी समझौते में शामिल किया जाएगा। इसके अलावा अगर एक आम दुश्मन मदीना पर हमला करता है तो तीनों समूह एकजुट होकर शहर की रक्षा करेंगे। हालांकि यह भी तय किया गया कि अगर मुसलमानों पर मदीना के बाहर हमला होता है तो गैर मुसलमानों को मुसलमानों की तरफ़ से लड़ने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा। इसके अलावा अगर यहूदी किसी दूसरे संगठन के साथ कोई भी समझौता करते हैं तो मुसलमानों की तरफ़ से उनका सम्मान किया जाएगा। यहूदी अपने धर्म के साथ रहेंगे और मुसलमान अपने धर्म के साथ। जब तीनों समूहों ने इस समझौते की शर्तों को स्वीकार किया तब आपसी सहमति से यह भी स्वीकार किया गया कि पवित्र पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे प्रमुख होंगे। बहरहाल जैसा कि मैंने आपसे पहले कहा था कि यहूदियों को शरीअत द्वारा बांधा नहीं जाएगा और यहूदी केवल यहूदी कानून और रीति रिवाजों से बाध्य होंगे। यह इस्लाम के अतिरिक्त हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बर्दाश्त और आपसी सम्मान का आदर्श उदाहरण था और अभी भी आई. एस. आई. एस. (ISIS) यह दावा करता है कि शरीअत के कानून हर एक व्यक्ति पर लागू होने चाहिए चाहे वह किसी भी धर्म या जाति का हो। उस समय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसी समझौते में औरतों के अधिकारों को भी स्थापित किया था।

यह स्पष्ट रूप से निर्धारित किया गया कि किसी औरत को उसके घर से उसकी इच्छा के बगैर नहीं निकाला जाएगा। इस प्रकार आई. एस. आई. एस. (ISIS) का यह दावा कैसे सही हो सकता है और कैसे गैर मुस्लिम औरत को अपनी संपत्ति समझ सकते हैं। संधि के अनुसार किसी भी व्यक्ति को कभी भी इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा बल्कि यह स्पष्ट रूप से कहा गया कि मुसलमानों द्वारा यहूदियों और गैर मुस्लिमों के साथ प्यार और करुणा और भाइयों के जैसा व्यवहार किया जाएगा। तो यह था

सारांश उस संधि का जिसने मुसलमानों के मदीना में आगमन के बाद मदीना के समाज को एक साथ जोड़े रखा। इतिहास इस बात का साक्षी है कि मुसलमानों ने इस संधि का पालन किया, और यदि संधि का कभी उल्लंघन हुआ तो वह दूसरे पक्षों के द्वारा किया गया था। मदीना के स्वीकृत नबी के रूप में कभी-कभी पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन लोगों या समूह से जो संधि का उल्लंघन करते या ग़लत तरीके से शामिल होते, स्वयं निपटते। लेकिन इस तरह की डांट डपट संधि में शर्तों के अनुसार साफ तौर पर दी गई थी और न कि यह किसी अन्याय के कारण थी। अत: यह है इस्लाम के राज्य का सच्चा प्रदर्शन। जिसकी बुनियाद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा रखी गई और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद यह इस्लाम की पहली सदी तक आप के चार ख़लीफ़ाओं के द्वारा जारी रखी गई और आज अगर आई. एस. आई. एस. (ISIS) या कोई और मुसलमान सरकार इन सिद्धान्तों को जो न्याय और समानता पर आधारित हैं, के ख़िलाफ़ काम करती है तो वह ऐसा सिर्फ अपने निजी या राजनीतिक हितों को पूरा करने के लिए कर रही हैं। यहां तक कि अगर वह इस्लाम के नाम पर काम करने का दावा करते हैं तो सच्चाई यही है कि उनके कार्यों का इस्लाम से कोई संबंध नहीं है और न ही हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जो शिक्षाएं हैं, उनसे कोई संबंध है। अगर हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन से पहले अरब के इतिहास को देखें तो वह एक ऐसा समाज था जिसमें हर राजनीतिक समूह ने रक्त पात और युद्ध के द्वारा अपने अधिकारों को हासिल करने की कोशिश की थी। फिर उसी समाज में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक ऐसी क्रांति लाई जिसमें आप ने न्याय की एक ऐसी उचित प्रणाली स्थापित की जिसमें प्रत्येक समूह से उसकी परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ही सुलूक किया जाता था। अगर कोई इस्लाम के इतिहास का प्रारंभ से निष्पक्ष तरीके से अध्ययन करता है तो वह देखेगा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके चारों ख़लीफ़ाओं के शुरुआती दौर में मुसलमानों का व्यवहार न केवल निर्दोष था बल्कि कभी भी वे किसी भी युद्ध में हमलावर नहीं थे और न ही कभी किसी की भूमि को जीतने की कोशिश करते थे। जहां भी उन्होंने इस्लाम की शिक्षाओं का प्रचार करने की कोशिश की उन्होंने वह केवल उपदेश के माध्यम से शांतिपूर्वक तरीके से ही किया। उदाहरण के तौर पर इस्लाम चीन और दक्षिण भारत में फैल गया और अभी तक इतिहास में कहीं भी यह नहीं आता कि कभी भी मुसलमान सेना ने उन देशों पर हमला किया हो बल्कि इस्लाम उन देशों में और दूसरे राष्ट्रों में शांतिपूर्वक तरीके से ही फैला था। इस के पश्चात कुछ मुस्लिम राजाओं ने विभिन्न कारणों से युद्ध की शुरुआत की जिसके लिए केवल उनको ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता। और यहां तक कि उन्होंने युद्धों में क़ब्ज़ा किए हुए देश के निवासियों को कभी भी धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर नहीं किया। निश्चित रूप से क़ुर्आन ऐसे मंसूबों को अस्वीकार करता है और केवल शांतिपूर्वक प्रचार सिखाता है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि जहां अल्लाह तआला ने रक्षात्मक धार्मिक युद्ध की अनुमति दी थी यह सभी धर्मों की सुरक्षा के लिए दी गई थी, न केवल इस्लाम के लिए। पवित्र क़ुर्आन में बहुत सी अलग-अलग आयतों मैं अल्लाह तआला ने विभिन्न स्थानों पर युद्ध के सिद्धांत निर्धारित किए हैं। उदाहरण के तौर पर अध्याय 2 आयत 191 में अल्लाह तआला ने रक्षात्मक युद्ध के सिद्धांत

स्थापित किए हैं जिसमें उसने केवल उन से लड़ने के लिए कहा है जो तुम्हारे खिलाफ़ युद्ध शुरू करते हैं। और कभी भी किसी से अत्याचार तथा निर्दयता पूर्वक व्यवहार न करो क्योंकि अल्लाह तआला कपटाचारियों से कदापि प्रेम नहीं करता। फिर अध्याय 16 आयत 127 में अल्लाह तआला मुसलमानों को आदेश देता है कि युद्ध के दौरान तुम अपनी सीमाओं को पार या उनका उल्लंघन न करो। अल्लाह तआला कहता है कि किसी भी ज़ुल्म का दंड उसी हद तक होना चाहिए जितना तुम पर अत्याचार किया गया हो। अध्याय 2 आयत 194 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि युद्ध के दौरान एक पक्ष को सिर्फ उस समय तक लड़ना चाहिए यहाँ तक कि कोई फ़ित्ना फसाद शेष न रहे और धर्म अल्लाह के लिए हो जाए। वह कहता है कि अगर ज़ुल्म करने वाले रुक जाएं और विवाद खत्म हो जाए तो उनके ख़िलाफ़ आगे कोई दुश्मनी नहीं दिखानी चाहिए। अध्याय 8 आयत 62 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अगर जालिम शांति की तरफ़ झुकते हैं और सुलह की तरफ़ हाथ बढ़ाते हैं तो मुसलमानों को इसे समझना चाहिए और यह सवाल नहीं करना चाहिए कि वह ईमानदार है या नहीं। इसके अतिरिक्त क़ुर्आन मजीद के अध्याय 9 आयत 4 में आता है कि मुसलमानों को हर समझौते को पूरा करना चाहिए जो उन्होंने मुशरिकों के साथ मिलकर किया है। (अगर मुसलमानों ने किसी तरह का ग़लत व्यवहार न किया हो और अपनी तरफ़ से अपने समझौते की शर्तों को निभाया हो तो) अल्लाह तआला कहता है कि संयम के लिए यह आवश्यक है। और अल्लाह संयमियों से प्रेम करता है। अध्याय 5 आयत 9 में अल्लाह निर्देश देता है कि हमेशा सही तरीके और न्याय से काम लो यहां तक की युद्ध की स्थिति में भी। अल्लाह फ़रमाता है कि किसी देश और क़ौम की दुश्मनी किसी भी मुसलमान से अन्याय पूर्वक काम नहीं करवा सकती क्योंकि यह संयम के ख़िलाफ़ है। अध्याय 8 आयत 68 में अल्लाह फ़रमाता है कि: किसी भी नबी के लिए यह जायज़ नहीं है कि वह किसी भी व्यक्ति को युद्ध की स्थिति के बगैर कैद में रखे क्योंकि अगर वह ऐसा करते हैं तो वह खुदा के प्रेम के लिए नहीं बल्कि सिर्फ अपनी ताकत और पैसे की परवाह करते हैं। तो इससे पता चलता है कि युद्ध के बगैर किसी को कैद करना सख्त मना है। और फिर भी आज हम देखते हैं कि यह तथाकथित इस्लाम के चाहने वाले असंख्य मासूम लोगों को जबरदस्ती कैद कर रहे हैं जबकि निराधार औरतों को रखैल बनाया जा रहा है। पवित्र क़ुर्आन के अध्याय 47 आयत 5 में अल्लाह फ़रमाता है कि युद्ध के कैदियों को युद्ध समाप्त होने के बाद आज़ाद कर देना चाहिए। इस आयत में अल्लाह फ़रमाता है कि या तो उन्हें हर्जाना लेकर आज़ाद छोड़ देना चाहिए और उससे भी बेहतर यह है कि उन्हें नरमी और रहम के तौर पर आज़ाद कर देना चाहिए। तो जब युद्ध समाप्त हो जाए तो कैदियों को आज़ाद कर देना चाहिए और यह पुरुष और महिला दोनों के लिए लागू होता है। पुराने ज़माने में जो पुरुष लड़ाई में भाग लिया करते थे उनकी हिम्मत बढ़ाने और मदद करने के लिए औरतें भी जंगी मैदान में जाया करती थीं तो इस तरह औरतें भी क़ैदी बनने में भागी हो जाती थीं लेकिन क़ुर्आन में यह साफ बता दिया गया था कि किसी भी औरत के साथ किसी भी तरह का क्रूर या दुर्व्यवहार नहीं किया जाएगा। क़ैदी आज़ाद करने के लिए रकम के बारे में पवित्र क़ुर्आन के अध्याय 24 आयत 34 में आता है कि अगर एक व्यक्ति एक कैदी को छुड़ाने में असमर्थ है तो किस्तों को स्वीकार करके क़ैदी को छुड़वाना चाहिए। यह आयतें जो युद्ध की ग़ुलामी से आज़ाद करवाने

के बारे में हैं इस आलोक में समझी जा सकती हैं जो पुराने जमाने में युद्ध लड़े जाते थे। उस समय जो युद्ध में लड़ते थे उन्होंने सब अपने दम पर किया और अपने हथियार खरीदे अत: उनको अनुमति दी गई की रकम लेकर कैदियों को आज़ाद कर दें लेकिन आजकल के युद्ध में वह सरकारें हैं जो इस अभियान को पूरी तरह से चलाती हैं और सैनिकों के लिए किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत लागत नहीं रखी है। तो युद्ध के कैदियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए यह निर्धारित करना सरकार या अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का काम है न कि व्यक्तिगत सैनिकों का। लम्बे अरसे तक अमन और शांति को बनाए रखने के लिए राष्ट्रों के बीच प्रवासी विद्रोह कार्यक्रम और अन्य समझौते अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए जा सकते हैं। निश्चित तौर पर व्यक्तिगत रूप से किसी भी व्यक्ति को बंदी बनाना अब नहीं होता है और ऐसा करना पूरी तरह से इस्लाम के ख़िलाफ़ है। क़ुर्आन में अल्लाह ने यह भी कहा है कि दूसरों की संपत्ति पर अपनी ईर्ष्या पूर्ण नज़र नहीं डालनी चाहिए। यह दुनिया में शांति को बनाए रखने के लिए यह एक सुनहरा सिद्धांत है। अगर इस्लाम की इस आज्ञा का पालन किया जाए तो किसी भी मुसलमान पर कभी भी यह प्रश्न नहीं किया जा सकता कि वह दूसरे की जमीन या क्षेत्रों या धन पर कब्जा करते हों। पवित्र क़ुर्आन के अध्याय 10 आयत 100 में अल्लाह फ़रमाता है कि वह सर्व शक्तिमान है अगर वह चाहे तो पूरी दुनिया से इस्लाम स्वीकार करवा सकता है फिर भी अल्लाह ने मानवजाति को कभी मजबूर नहीं किया और पवित्र पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को निर्देश दिया कि सेनाओं को इस्लाम फैलाने की अनुमति न दी जाए और धर्म प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसके हृदय और विवेक का मामला है इसलिए यह स्पष्ट है कि किसी भी व्यक्ति को इस्लाम को मानने के लिए मजबूर करना किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं है। इसमें कोई शक नहीं कि मुसलमानों को इस्लाम के संदेश का प्रचार करने को कहा गया है, लेकिन बस यही सब। इसी तरह अध्याय 18 आयत 30 में अल्लाह तआला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाता है कि दुनिया को सूचित करें कि ख़ुदा की तरफ़ से एक सत्य आया था वह सफलता और समृद्धि का एक प्रतीक था और वह उसे स्वीकार और अस्वीकार करने के लिए स्वतंत्र थे। यह शब्द सबके सुनने और देखने के लिए स्पष्ट हैं। सभी लोग विश्वास करने और न करने के लिए स्वतंत्र हैं। इस प्रकार जब पवित्र पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को केवल इस्लाम का संदेश पहुंचाने के लिए कहा गया और उससे आगे कुछ भी नहीं। तो फिर भी आजकल के तथाकथित मुसलमान इससे आगे किस प्रकार जा सकते हैं? और वे क्या सोचते हैं कि उनके पास इस्लाम के पैगंबर की तुलना में अधिक शक्ति और अधिकार हैं? अत: मैंने पवित्र क़ुर्आन की विभिन्न आयतों से इस्लाम की शिक्षा का केवल संक्षिप्त सारांश दिया है जो यह साबित करता है कि क्रूरता का प्रदर्शन जो कि कुछ मुस्लिम समूहों और यहां तक के राष्ट्रों द्वारा किया जा रहा है पूरी तरह से इस्लाम के विपरीत है। आपको आश्चर्य हो सकता है कि अगर यह इस्लाम की शिक्षाओं के विपरीत है तो वह क्यों इस मार्ग पर चल रहे हैं। सरल शब्दों में बात यह है कि जैसा कि मैंने पहले कहा कि वह यह सब केवल अपने सांसारिक हितों को पूरा करने के लिए कर रहे हैं। उनका लक्ष्य आध्यात्मिक या धार्मिक बिल्कुल नहीं है। वह सांसारिक गतिविधियों को धर्म के नाम पर क्रूरता और रक्तपात के माध्यम से प्राप्त करना चाहते हैं। मैं फिर से कहता हूं कि किसी

भी अहमदी मुसलमान या वास्तव में किसी भी शांति प्रिय मुसलमान को बहुत दर्द महसूस होता है कि उनके पवित्र धर्म को इस अन्याय पूर्ण तरीके से कलंकित और शोषित किया जा रहा है।

यद्यपि मैं उन लोगों, संगठनों और राजनेताओं से भी सवाल करना चाहूंगा जो कुछ आतंकवादी समूहों के अत्याचारों के कारण यह दावा करते हैं कि इस्लाम धर्म हिंसा का धर्म है। मैं उनको इस बात पर विचार करने के लिए कहूंगा कि कैसे यह समूह इस तरह के धन प्राप्त करने में सक्षम है जो उन्हें आतंकवादी गतिविधियों और युद्ध को इतने लंबे समय तक जारी रखने की अनुमति देते हैं? वह ऐसे आधुनिक हथियार कैसे प्राप्त करते हैं। क्या उनके पास हथियार बनाने वाले कारखाने हैं। यह बहुत स्पष्ट है कि वह कुछ शक्तियों से सहायता और समर्थन प्राप्त कर रहे हैं। यह तेल समृद्ध मुस्लिम राज्यों से सीधे समर्थन हो सकता है या अन्य प्रमुख शक्तियां हो सकती हैं जो गुप्त रुप से सहायता प्रदान करती हैं। जब आई. एस. आई. एस. (ISIS) पहली बार वजूद में आया था तब यह कहा गया था कि उन्होंने राष्ट्रीय सेना के हथियारों और सेना के कुछ डीपो पर कब्जा कर लिया था। यह सच हो सकता है लेकिन उनके लिए अब तक उनकी गतिविधियों को जारी रखने हेतु यह काफी नहीं होगा। अगर नियमित सेना की आपूर्ति लाइन काट दी जाए तो उनके लिए इसे जारी रखना असंभव है और अभी तक आई. एस. आई. एस. (ISIS) की आपूर्ति लगातार बढ़ती हुई दिखाई दे रही है। ऐसा कहा जाता है कि अब वह विभिन्न विमान भेदी मिसाइल और अन्य परिष्कृत हथियारों के भी मालिक हैं। यह सब उस आपूर्ति लाइन की तरफ़ इशारा है जो आई. एस. आई. एस. (ISIS) की सहायता करती है। यह भी सामान्य ज्ञान है कि उनके पास सैकड़ों लाखों डॉलर की भारी राशि है। इसलिए केवल यही माना जा सकता है कि उनके पास बाहरी समर्थन है। कई अधिकारियों, विश्लेषकों और टिप्पणीकारों ने खुले तौर पर इस सिद्धांत की तरफ़ समर्थन व्यक्त किया है। उदाहरण के तौर पर संयुक्त राज्य अमेरिका सरकार के एक वरिष्ठ प्रतिनिधि डेविड कोवेन जो कि आतंकवाद और वित्तीय खुफिया इंटेलिजेंस के सेक्रेटरी हैं, ने यह सार्वजनिक रूप से कहा कि आई. एस. आई. एस. (ISIS) अब तक का सबसे ज़्यादा पोषित समूह है जिसका हम सामना कर रहे हैं वह कहते हैं कि वह हर महीने दस लाख डालर खर्च कर रहे हैं और रोजाना ब्लैक मार्केट में एक मिलियन डॉलर का तेल बेच रहे हैं। हमें यह पूछना होगा कि वह कैसे और कहां से इस तरह बिना रुकावट पहुंच से बड़ी मात्रा में तेल प्राप्त कर रहे हैं? दुनिया के अन्य भागों में तेल को ढोने और बिक्री पर भारी निगरानी है और कुछ तेल समृद्ध राज्यों के ख़िलाफ़ प्रतिबंध भी लगाए जा चुके हैं फिर भी किस तरह आई. एस. आई. एस. (ISIS) सभी प्रकार के नियमों को तोड़कर तेल का अधिग्रहण और बड़ी मात्रा में बेचने में सक्षम है? हालांकि हम सब जानते हैं कि तेल का इतनी बड़ी मात्रा में व्यापार और ट्रांसपोर्ट आसानी से छुप नहीं सकता। यह भी कहा जाता है कि आई. एस. आई. एस. (ISIS) को नाजायज़ पैसों के द्वारा नियमित आय मिलती है। लेकिन यह अभी भी आमदनी के दूसरे माध्यमों के मुकाबले में बहुत छोटी राशि है। इन समूहों का वित्तपोषण एक बड़ी समस्या है क्योंकि इसी धन के द्वारा वह कमज़ोर समूहों या व्यक्तियों पर हमला करने में सक्षम हैं। उदाहरण के तौर पर अभी एक हालिया रिपोर्ट में यह कहा गया है कि यदि कोई परिवार अपने परिवार के सदस्यों में से एक सदस्य को ग्रुप में शामिल होने के लिए भेजता है तो

प्रारंभ में उन्हें कमाई के रूप में हजारों डॉलर दिए जाते हैं। और उसके बाद सैंकड़ो डॉलरस नियमित रूप से दिए जाते हैं। इस प्रकार इन समूहों के वित्तपोषण को रोकने के लिए फौरी तौर पर कुछ किया जाना चाहिए। पश्चिमी देशों ने अब महसूस करना शुरू किया है और यह स्वीकार किया है कि यह ऐसा युद्ध है जो वास्तव में सीधे तौर पर उनको भी प्रभावित कर रहा है। हालांकि यह भी कम अनुमान है सच्चाई यह है कि यह युद्ध पूरी दुनिया के ख़िलाफ़ है।

आए दिन हम देखते हैं कि प्रमुख शक्तियां विभिन्न मामलों पर मुस्लिम देशों में अत्यधिक प्रभावित या यहां की नीतियों को नियंत्रित करने में सक्षत्र हैं। तो सवाल यह है कि इस क्षेत्र में उन्होंने अपने प्रभाव को क्यों नहीं बढ़ाया जहां वास्तव में इसकी आवश्यकता है। सभी प्रकारों के युद्ध से लड़ने के लिए ठोस संयुक्त और एकजुट प्रयास क्यों नहीं है। बल्कि जो कोशिश अब हो रही है वह बहुत छोटी है यहां तक कि अभी किए जा रहे प्रयास उस तबाही की तुलना में बहुत छोटे हैं जो इस समूह के कारण होगी। मेरे विचार में जो कुछ भी हो रहा है वह केवल मुस्लिम दुनिया की ग़लती नहीं है। बल्कि बाहरी ताकतें और शक्तियां भी हैं जो इस विनाशकारी स्थिति में योगदान दे रही हैं।

सालों से सीरिया और इराक़ जैसे देशों में घरेलू संघर्ष हो रहे हैं और विद्रोही समूहों तथा गुटों को बाहरी शक्तियों ने वित्त पोषित, सशस्त्र और समर्थित किया है और जिस में तेज़ी से वृद्धि हुई है और वे अपने भुगतान करने वालों के नियंत्रण से बाहर जा चुके हैं और उनके जैसी आतंकवादी विचारधाराओं पर आधारित सभी प्रकार के आतंकवाद का नेतृत्व कर रहे हैं। यह बता कर मैं कुछ ऐसा नहीं कह रहा हूं जो पहले से लोगों के ज्ञान में न हो या खुले तौर पर मीडिया ने इसे पेश न किया हो। आतंकवादी समूह जैसे कि आई. एस. आई. एस. (ISIS) ऐसी ही नीतियों की पैदावार हैं और अब अपने आतंक का जाल बहुत दूर तक बढ़ा और फैला रहे हैं और पूरे विश्व को प्रभावित कर रहे हैं।

मैं फिर कहता हूं कि यह मेरे लिए बहुत दर्द और चिंता की बात है कि यह सब बुरे कार्य इस्लाम के साथ जोड़े जा रहे हैं। आजकल यह एक बड़ी चिंता की बात है कि पश्चिम के मुसलमान युवक सीरिया और इराक़ जैसे देशों में जा रहे हैं जहां उन्हें कट्टरपंथ का सामना करना पड़ रहा है यह भी काफी हद तक संभव हो सकता है कि वे अपने घरेलू देशों में वापस आ जाएं और यहाँ हमला करें या दुनिया के इस हिस्से में तबाही का कारण बनें। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यह अब स्थानीय या मुस्लिम मुद्दा नहीं है यह एक अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा है जिसे रोकने के लिए एक वैश्विक और ठोस प्रयास की आवश्यकता है। कुछ प्रमुख आंकड़े यह बताते हैं कि उग्रवाद के साथ इस युद्ध को समाप्त होने में 30 या 100 वर्ष लगेंगे। निजी तौर पर मुझे विश्वास है कि आतंकवाद और आतंकवादी समूहों को बहुत थोड़े समय में रोका जा सकता है अगर दुनिया इन्हें समाप्त करने के लिए संकल्प ले ले। हमें आसानी से यह कहकर अपनी निजी ज़िम्मेदारियों से मुक्त नहीं होना चाहिए कि इस युद्ध को समाप्त होने में दशक लग जाएंगे बल्कि हर किसी को इस वैश्विक चरमपंथ का मुकाबला करने के लिए इस प्रयास में शामिल होना चाहिए। आसानी से इस्लाम या किसी विशेष समूह को दोष देना,

शेष पृष्ठ 32 पर

मिरक़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन

(हज़रत मौलवी नूरुद्दीन[रज़ि] ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम की जीवनी)

(भाग- 31) अनुवादक - फ़रहत अहमद आचार्य

हरमैन शरीफ (मक्का-मदीना) के लिए सफ़र

मुझको इस बुखार ने जो भोपाल में आया था भोपाल से जुदा होने के बाद भी सफ़र में नहीं छोड़ा मगर उस का ये क़ायदा था कि पंद्रह दिन के बाद सिर्फ एक दिन के लिए हुआ करता था। रस्ते में बुरहानपुरा स्टेशन पर मैं उतरा, जब शहर में गया तो एक आदमी मौलवी अब्दुल्लाह नामक मुझको मिले उन्होंने मेरी बड़ी ख़ातिर तवाज़ों की और कहा कि मैं तुम्हारे बाप का दोस्त हूँ जब मैं रुख़स्त हुआ तो उन्होंने मुझको मिठाई की एक टोकरी दी। जब रास्ते में टोकरी खोली तो उस में एक हज़ार रुपया की हण्डी मक्का मुअज़्ज़मा के एक साहूकार के नाम थी और कुछ नक़द रुपया भी था। उस हण्डी में लिखा था कि नूरुद्दीन को एक हज़ार रुपया तक जब वह मांगें दे दो और हमारे हिसाब में लिख लेना, उस के हौसला को देखकर मुझे ताज्जुब हुआ यद्यपि मैंने वह एक हज़ार रुपया वसूल नहीं किया मगर उनके हौसला की दाद देनी ज़रूरी है। उन मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ने बयान किया कि मैं साहेवाल ज़िला शाहपुर का निवासी हूँ मैं मक्का मुअज़्ज़मा में हज को गया उस ज़माने में मैं बहुत ही ग़रीब था मक्का मुअज़्ज़मा में सुबह से शाम तक "लुकमतुन लिल्लाह, मिस्कीन" (अर्थात असहाय हूँ कोई एक लुकमा दे दो) पुकार कर भीख मांगता था। फिर भी सही से पेट नहीं भरता था और तमाम दिन बाज़ारों, गली-कूचों में फिरता रहता था। एक दिन मेरे दिल में ख़्याल आया कि तू अगर कभी बीमार हो जाये और इतना अधिक न चल सके तो भूक के मारे मर जाएगा। इस तहरीक के बाद मैंने इरादा किया कि बस आज ही मर जाऐंगे और अब भीख न मांगेंगे। फिर मैं खाना काबा में गया और पर्दा पकड़ कर यूं इक़रार किया कि : "हे मेरे मौला यद्यपि तू इस वक़्त मेरे सामने नहीं मगर में इस मस्जिद का पर्दा पकड़ कर वादा करता हूँ कि किसी इंसान और किसी मख़लूक़ से अब नहीं माँगूँगा" ये वादा करके पीछे हट कर बैठ गया इतने में एक शख़्स आया उसने मेरे हाथ पर डेढ़ आना के पैसे (अंग्रेज़ी सिक्के) रख दिए। अब मेरे दिल में ये शक हुआ कि मेरी शक्ल भिखारी की सी है यद्यपि मैंने ज़बान से नहीं मांगा, इसलिए मेरे लिए ये पैसे जायज़ हैं या नहीं मैं ये सोचने लगा और वह व्यक्ति इतने में ग़ायब हो गया। मैंने वहां से उठकर दो पैसे की रोटी खा ली और चार पैसे की माचिस ख़रीद लीं जो बारह डिब्बियां मिलीं। चूँकि मुझको गली कूचों में दिन-भर चलने की आदत तो थी ही, इन माचिसों को हाथ में लेकर किबरीयत-किबरीयत कहता फिरता था। थोड़ी देर में वह छः पैसे की बिक गईं। फिर मैंने छः पैसे की खरीदीं वह भी इसी तरह बेच दीं। आख़िर शाम तक मेरे पास एक चवन्नी हो गई दो पैसे की रोटी खा कर रात को सो गया। दूसरे दिन फिर माचिस खरीदीं और इसी तरह बेचीं। कुछ दिन के बाद वह इतनी हो गईं कि जिनके उठाने में दिक्कत होती थी आख़िर मैंने वह चीज़ें जिनकी औरतों को ज़रूरत होती है खरीदीं और गठरी कमर से लगा कर फिरने लगा मगर सौदा ऐसा ख़रीदता था और मुनाफा इतना कम लेता था कि शाम तक सब बिक जाए। रात को

बिलकुल फ़ारिग़ हो कर सोता था कुछ दिनों बाद एक चादर बिछा कर इस पर सौदा रख कर बेचने लगा। फ़िर कुछ दिन बाद इतनी तरक्की हो गई कि मैंने आधी दुकान किराए पर ले ली। फिर और तरक्की हुई कि मैं मुंबई आ गया।

मैं वहाँ क़ुरान शरीफ़ ख़रीद कर आस-पास के गाँवहं और कस्बों में ले जाकर बेच देता था। तब मेरी ख्याति इस कदर बढ़ गई कि मैं तीस हज़ार रुपये की क़ुरान शरीफ़ ख़रीद कर तुम्हारे शहर भेरा ले गया और तुम्हारे पिता ने सब ख़रीद लीं। उनमें से मैंने बहुत लाभ कमाया। फिर उसी तरह मैं हज़ारों-हज़ार कुरान शरीफ खरीदता और बेच देता। जब मैंने देखा कि अब रुपया बहुत अधिक हो गया है और इस व्यापार से अधिक है, तब मैंने कपड़े का व्यापार करना शुरू कर दिया। माल बहुत जल्दी बेचने और बहुत कम लाभ लेने की मेरी आदत थी। अब माल इतना बढ़ गया कि मैं इसे बुरहानपुर से नहीं ले जा सकता था अत: मैंने यहां एक घर बनाया और अब मैं इतना बड़ा आदमी हूं। मैंने इस हदीस को सही पाया, जिसमें कहा गया है कि व्यापार में बहुत लाभ है।

जब मैं बंबई पहुंचा तो मौलवी इनायतुल्ला साहब से मिला। उस समय मुझे "फौज़ुल कबीर" का बहुत शौक था। मैंने उनसे कहा कि यह किताब मुझे कहीं से लाकर दे दो। तो उन्होंने मुझे बॉम्बे में छपी हुई किताब दिखाई और कहा कि हम इसके लिए पचास रुपए लेंगे। मैंने तुरंत पचास रुपये का नोट निकाला और उसे दे दिया। और वह किताब लेकर खड़ा हो गया और बाहर जाने लगा - उसने कहा: तुम इतनी जल्दी क्यों उठ गए? मैंने कहा कि क्रय-विक्रय का एक अलग मसला है। हनफी लोग 'बात के पक्का होने पर' विश्वास करते हैं और मुहद्दिसीन का झुकाव 'ए-दूसरे से अलग और दूर हो जाने' की ओर है। मैं चाहता हूं कि एहतियात के तौर पर दोनों के हिसाब से सौदा पक्का और मज़बूत हो जाए इसलिए आपके मकान से जाने का इरादा है। हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर ने भी एक बार ऐसा ही किया था। इसलिए मैं इस समय उनका अनुसरण करता हूं। मैं वहां से उठता हूं और गली में जाता हूं और फिर जल्दी से वापस आ गया, थोड़ी देर बैठ गया और बात करता रहा। मैंने उनको बहुत नेक और अच्छा इंसान पाया। जब मेरी बात खत्म हुई तो मैं उठने लगा, तब उन्होंने पचास रुपये का नोट निकाला और मुझसे कहा कि मैं आपको अपनी ओर से वह किताब देता हूं क्योंकि जो मैंने अच्छी किताबों के प्रति आपका प्यार देखा है इस वजह से। मैंने कहा कि यद्यपि मैं एक छात्र हूं लेकिन जरूरतमंद नहीं हूं, मुझ पर हज अनिवार्य है, लेकिन उन्होंने मुझे वह पचास रुपये वापस कर दिए या यह समझो कि उन्होंने अपनी ओर से दिए।

मुंबई से रवानगी के वक़्त मुझको अपने वतन के पाँच आदमी हज को जाते हुए मिले जिनकी वजह से मुझको जहाज़ में बड़ा आराम मिला क्योंकि वे मेरे मुफ़्त के ख़िदमत गुज़ार होते थे। बंदरगाह हदीदा में इस जहाज़ को कुछ समय ठहरना था। मैं जवान आदमी था इसलिए मेरा इरादा हुआ कि जब तक जहाज़ लंगर डाले हुए है मैं यमन के अंदरूनी हिस्सा के उलमा को देख आऊं। अत: मैं हदीदा से मराइह पहुंचा और वहां से मैंने बहुत कुछ फाइदा उठाया और ताज्जुब है कि वहां के एक नौजवान ने मुझसे अलफ़ीया की इजाज़त लिखवाई जो मुझको उस वक़्त बड़े अचंभे की बात मालूम होती थी। उस नौजवान ने कुछ अलफ़ीया मुझसे पढ़

भी लिया। उन लोगों में से जो सफ़र में मेरे साथ थे दो व्यक्तियों को मैंने देखा कि बिना किसी हिसाब किताब के मिलजुल कर एक दूसरे का ख़र्च उठाते हैं मैंने कहा: मैं पढ़ा लिखा आदमी हूँ मुझसे लिखवा लिया करो। उनको मेरी ये बात बड़ी ही बुरी लगी और कहा कि आप भाइयों में भेदभाव डलवाना चाहते हैं। मैं समझता था कि ये मज़दूरी पेशा लोग हैं और यहां ख़र्च बहुत होता है। उनके इस शामिल खाते का अंजाम अच्छा न होगा। वह दोनों तो मुझसे इस तरह नाराज़ हो गए। उनमें से एक बूढ़े व्यक्ति थे वह तो वैसे ही सम्मान योग्य थे। चौथे सज्जन जिनसे बहुत आराम मिलता था उन्होंने मुझसे कहा कि अपनी किताबें मेरे संदूक़ में रख दो क्योंकि इस में जगह ख़ाली है। मुझे सफ़रों का अनुभव नहीं था मैंने किताबें रख दीं।

हम लोग जददा से सवार हुए, पड़ाव पर जहां ठहरे वहां ये हादसा हुआ कि उनके संदूक़ की कुंजी गुम हो गई वह तबीयत के बड़े तेज़ थे मुझसे कहने लगे कि तुम्हारी किताबों के कारण चूँकि संदूक़ भारी था इसलिए उस की कुंजी किसी ने चुराई है तुम अभी कुंजी पैदा करो मैंने कहा कि तुम्हारी कुंजी मैंने चुराई नहीं और मेरी किताबें अपने संदूक़ में तुमने ख़ुद ही आग्रह पूर्वक बिना मेरे निवेदन के रखी हैं मगर वह कुछ ऐसे ज़िद्दी आदमी थे कि एक ही बात पर अड़ गए और कहा कि मेरी कुंजी इसी समय पैदा करो। ये मुआमला इतना बढ़ गया कि शोर बरपा हुआ और इर्द-गिर्द के तमाम लोगों को सूचना मिली। एक हमारे साथ लोहार था उसने कहा कि इस ताले की आला से आला कुंजी मक्का मुअज़्ज़मा में पहुंचते ही बना दूंगा मगर उस वक़्त यहां चूँकि कोई सामान नहीं इसलिए मजबूर हूँ। संदूक़ वाले ने कहा कि मैं तो अपनी कुंजी मांगता हूँ। तो वह ऐसे पीछे पड़े कि किसी तरह चैन नहीं लेने देते थे मैंने मिन्नत समाजत भी की और लोगों ने भी उनकी ख़ुशामद की और समझाया मगर वह अपनी बात से न टले। रात को वह और हम सब सो गए। उसी रात तुर्कों के कैंप पर चोरों ने हमला किया, तुर्क लोग सिपाही थे उन्होंने चोरों का पीछा किया भागते चोरों की कुंजियाँ रह गईं और ये करिश्मा इस दुआ का था जो रात को मैंने खुदा से की थी (पृष्ठ 110-112) **शेष.....**

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है (5)

लेखक - आसिफ महमूद बासित साहिब **(भाग – 24)** अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

भाग पंचम

लेखों की इस श्रृंखला में किसी स्थान पर कहा गया है कि सामान्य व्यक्ति की और ख़लीफ़तुल मसीह की स्मरणशक्ति तथा विवेक की wave length के बीच ज़मीन-आसमान का अंतर होता है। हमारे विवेक ज़मीन पर लोट मारते हैं तो ख़लीफ़तुल मसीह के विचार आसमान में उड़ रहे होते हैं। फिर हमारी मजबूरी है कि हम अपने विवेकानुसार समस्त मामलों को समझने का प्रयास करते हैं, जब कि ख़लीफ़तुल मसीह की दूरदर्शिता हमारी 3D में क़ैद अक़्लों से उच्चतर किसी और दिशा से संबंध रखती है। इस बात का कई बार अनुभव ऐसे हुआ कि विनीत जिस दिन यह सोच कर मुलाक़ात करने गया कि आज जो चार प्वाईंट मेरे पास लिखे हैं, उन पर बहुत समय लग जाएगा क्योंकि उनमें से कुछ मामले जटिल हैं, तो उस दिन हुज़ूर ने हर मामले पर एक-एक सेकेंड में उत्तर प्रदान किया और चारों बातों पर मार्गदर्शन कुछ मिनट में प्राप्त हो गया। जिस दिन ख़्याल था कि आज तो दो ही बातें पूछने वाली हैं, मामूली सी बातें हैं जल्द तय हो जाएँगी, उस दिन हर बात पर दस-दस, पंद्रह-पंद्रह मिनट हुज़ूर अनवर ने प्रदान किए और उनसे संबंधित और बातें भी पूछीं, उन पर भी विवरण सहित मार्गदर्शन दिया। कभी यों हुआ कि कुछ मिनट का संक्षिप्त filler बनाया जो एम॰टी॰ए॰ पर चलना है। इच्छा है कि हुज़ूर देखें परंतु आदेश हुआ कि "यहां रख दो, देख सका तो देख लूँगा।" लेकिन फिर कभी यह कि 45 मिनट का प्रोग्राम है। मुलाक़ात में इस की DVD प्रस्तुत की। फ़रमाया लगाओ।"

उठ कर हुज़ूर के कमरे में रखे DVD प्लेयर में प्रोग्राम चलाया। ख़ुद एक तरफ़ खड़ा हो गया। प्रोग्राम चल रहा है और हुज़ूर अपने काम में मसरूफ़ हैं। दफ़्तरी डाक, ज़ाती डाक के अंबार हैं जो हुज़ूर के सामने रखे हैं। अगर 45 मिनट का प्रोग्राम है तो मेरा अवलोकन है कि हुज़ूर की शुभ दृष्टि टीवी की स्क्रीन पर जितनी देर ठेहरी, वह समय 45 सैकण्ड या बहुत हुआ तो एक मिनट बना होगा। शेष समस्त समय हुज़ूर अपने काम में व्यस्त हैं। लेकिन इस से ज़्यादा आश्चर्यजनक बात यह है कि कहीं अचानक हुज़ूर ने रोका और निर्देश दिए। पहले-पहल तो यह होता कि मैंने तो क्योंकि (प्रोग्राम) बनने के सारे मराहिल देख लिए होते थे, फिर प्रोग्राम बन जाने के बाद कई दफ़ा उसे review भी कर लिया होता था, इसलिए उस समय इतना ध्यान नहीं रहता था। अपितु ऐसे में हुज़ूर अनवर को नज़र भर कर देखने का शौक़ पूरा किया करता था। परंतु ऐसे अवसर ने यह सबक़ सिखा दिया कि ख़ुद भी तवज्जा बरक़रार रखी जाए क्योंकि हुज़ूर ने अचानक यदि कुछ पूछ लिया तो यह न हो कि ख़ुद मुझे मालूम ही न हो कि क्या बात चल रही है। परंतु जहां भी हुज़ूर अनवर ने नज़र उठा कर देखा, वहां अधिकतर कुछ सुधार की आवश्यकता होती है।

एक प्रोग्राम तैयार किया गया जिसमें ग़ैर अहमदी मुसलमानों के प्रदर्शनकारी जलसे थे। अचानक हुज़ूर की शुभ दृष्टि टीवी स्क्रीन की ओर उठी। हुज़ूर ने तस्वीर को वहीं रोका और दूर पिछली लाइन में एक व्यक्ति

के चेहरा के बारे में फ़रमाया कि बिलकुल हमारे अमुक व्यक्ति अहमदी की तरह का है। मैंने ग़ौर से देखा तो बिलकुल वही चेहरा। स्वयं कई बार इस प्रोग्राम की तैयारी के दौरान इस फुटेज को देखा था। साथ काम करने वाले दोस्त भी इस चेहरे से अच्छी तरह अवगत थे परंतु किसी का ध्यान इस ओर न गया था। वापिस आकर अपने साथियों को हाल सुनाया तो सबने दोबारा वह भाग देखा। सब इस अहमदी दोस्त से ख़ूब वाक़िफ़ थे जिनसे उस व्यक्ति की समानता थी, अत: सब कह उठे कि समानता तो सौ फ़ीसद है। यह यद्यपि देखने में एक ज़िमनी बात थी परंतु इस में भी attention to detail का गहरा सबक था। यद्यपि वह साहिब वह नहीं थे जिनसे उनकी समानता थी परंतु मुझे मेरे शोबा के हवाले से यह सबक़ मिला कि कोई भी ऐसी बात अनदेखी नहीं होना चाहिए।

बात चल रही थी कि हम कुछ सोच कर जाते हैं, होता कुछ और है। हम अपनी बुद्धि के अनुसार सोचते हैं, वहां दूरदर्शिता की धारा किसी और दिशा में चल रही होती है। इन्सान अपनी कम अकली के कारण हमेशा अपनी इच्छाओं को ठीक समझता है। और यदि दुनिया का कोई काम उस की इच्छाओं के अनुसार न हो तो वह अपनी अक़्ल के सीमित होने और अपनी इच्छाओं में ग़लती की संभावना की गुंजाइश निकालने की बजाए परिणाम में त्रुटि तलाश करने लगता है जो उस की इच्छा के अनुसार न निकला हो। इस बात में सबसे ज़्यादा एहतियात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह के साथ पेश आने वाले मामलों में रखनी चाहिए। या तो अपनी इच्छाओं और विचारों को उस की दूरदर्शिता के सामने तुच्छ मान लें, या यदि ऐसा करने में कठिनाई हो तो बैअत के शब्द और अपनी ज़ेली तंज़ीम के वचन को दोबारा पढ़ लें और अपने ईमान की चिंता करें। हमारी हालत तो वह होनी चाहिए जो मेरे जवान मरहूम दोस्त सय्यद नासिर अहमद ने अपने एक शेअर में यूं बयान की कि :

क़दम बढ़ा दिया हमने तेरे क़दम के साथ
हमें ख़बर भी नहीं कौन से यह ज़ीने हैं।।

☆ ☆ ☆

स्वप्न में शत्रु से भागने का अर्थ

स्वप्न में शत्रु से भागने के बारे में हजरत साहब ने फ़रमाया कि :

इसके यह अर्थ होते हैं कि शत्रु पर विजय होगी। इसके उदाहरण में तावील करने वालों (अर्थ लगाने वालों) ने मूसा अलैहिस्सलाम के किस्से को प्रस्तुत किया है कि मूसा अलैहिस्सलाम फिरौन से भागे, वह (फिरौन) शत्रु था, अंतत: आप ही फिरौन पर विजई हुए। (मलफूज़ात जिल्द 3)

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

सिलसिला अहमदिया (अर्थात अहमदियत का परिचय) जिल्द-1

(लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब M.A.)

(भाग-33) अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

यह रहस्योद्घाटन आप पर धीरे-धीरे हुआ अत: यही कारण है कि जहां आप प्रारंभ में सदैव अपने बारे में नबी और रसूल के शब्दों का अर्थ करते थे और उन शब्दों को अपने लिए प्रयोग नहीं करते थे वहां आप ने 1901 ई० में और उस के बाद इन शब्दों को न केवल अपने लिए स्वयं प्रयोग किया बल्कि जब आपको यह सूचना मिली कि आपके एक मुरीद ने आपके बारे में बयान किया है कि आपको नबुव्वत का दावा नहीं है तो आपने उसे तंबीह की और उस की ग़लती के निवारण के लिए एक पुस्तिका लिख कर प्रकाशित की जिसमें स्पष्टीकरण के साथ लिखा कि मुझे सिर्फ शरीअत वाली नबुव्वत या अपनी ज़ात में स्थायी नबुव्वत से इनकार है अन्यथा ज़िल्ली और बरूज़ी नबुव्वत से इनकार नहीं है और मैं इस बात का मुद्दई हूँ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ से और आप के अनुसरण में मुझे ख़ुदा ने बरूज़ी (प्रतिरूप) रंग में नबुव्वत का पद प्रदान किया है। अत: आप ने अपने विज्ञापन "एक ग़लती का इज़ाला" में 1901 ई० में लिखा कि:

> "कुछ दिन हुए हैं कि एक साहब से एक विरोधी ने यह ऐतराज़ किया कि जिसकी तुमने बैअत की है वह नबी और रसूल होने का दावा करता है। उसका जवाब सिर्फ़ इन्कार के शब्दों से दिया गया है। हालाँकि ऐसा जवाब सही नहीं है। सच बात यह है कि ख़ुदा तआला की वह पवित्र ईशवाणी जो मुझ पर उतरती है उसमें रसूल और मुर्सिल और नबी आदि के ऐसे शब्द एक बार नहीं बल्कि सैंकड़ों बार मौजूद हैं। फिर किस तरह यह जवाब सही हो सकता है कि ऐसे शब्द मौजूद नहीं हैं। बल्कि इस समय तो पहले युग की अपेक्षा अधिक स्पष्ट और व्याख्या के साथ ये शब्द मौजूद हैं..... अगर यह कहा जाए कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ात्मुन्नबीयीन हैं फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद दूसरा नबी किस तरह आ सकता है? इसका जवाब यही है कि नि:सन्देह उस तरह से तो कोई नबी नया हो या पुराना नहीं आ सकता जिस तरह से आप लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आख़िरी ज़माना में उतारते हैं..... नुबुव्वत की सारी खिड़कियाँ बन्द की गयीं मगर एक ख़िड़की सीरत-ए-सिद्दीक़ी की खुली है अर्थात् फ़ना फ़िर्रसूल की (अर्थात् आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूर्ण आज्ञापालन और प्रेम में समपर्ण की)। अत: जो भक्त इस खिड़की की राह से ख़ुदा के पास आता है उस पर ज़िल्ली (अर्थात् प्रतिरूप के) तौर पर वही नुबुव्वत की चादर पहनाई जाती है जो नुबुव्वत-ए-मुहम्मदी की चादर है। इसलिए उसका नबी होना ग़ैरत की जगह नहीं क्योंकि वह अपने अस्तित्व से नहीं

बल्कि अपने नबी के कुंड से लेता है..... मेरी नुबुव्वत और रिसालत मुहम्मद और अहमद होने के दृष्टिकोण से है न कि मेरे अपने अस्तित्व के कारण। और यह नाम फ़ना फिर्रसूल अर्थात् आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पूर्ण आज्ञा पालन और आपकी ओर पूर्ण रूप से समर्पित होने के कारण मुझे मिला। इसलिए ख़ात्मुन्नबियीन के अर्थ में कोई फ़र्क न आया..... ये समस्त बरकतें बिना माध्यम के, सीधे तौर पर मुझ पर नहीं हैं बल्कि आसमान पर एक पवित्र वजूद है जिसकी रूहानी अनुकंपा मुझ पर है अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। इस माध्यम की दृष्टि से और उस में होकर और उसके नाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नामित होकर मैं रसूल भी हूँ और नबी भी हूँ।" (तबलीग़ रिसालत जिल्द 10 पृष्ठ 13-19, विज्ञापन एक गलती का इज़ाला दिनांक 5 नवंबर 1901 ई०)

इस के बाद आपने अपनी पुस्तकों में अपने इस दावा के मुतल्लिक़ अधिक विवरण भी दिया, मसलन अपनी तसनीफ़ हक़ीक़तुल वह्यी में आप फ़रमाते हैं :

"इस उम्मत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण की बरकत से हज़ारों वली हुए हैं और एक वह भी हुआ जो उम्मती भी है और नबी भी.....मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ जिस के हाथ में मेरी जान है कि उसी ने मुझे भेजा है और उसी ने मेरा नाम नबी रखा है..... ख़ुदा के हित एवं दूरदर्शिता ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आध्यात्मिक दानशीलता का कमाल सिद्ध करने के लिए यह श्रेणी प्रदान की कि आप के वरदान की बरकत से मुझे नुबुव्वत के स्थान तक पहुंचाया.....प्रारंभ में मेरी यही आस्था थी कि मेरी मसीह इब्ने मरयम से क्या तुलना है वह नबी है और ख़ुदा के महान सानिध्य प्राप्त लोगों में से है। यदि कोई बात मेरी श्रेष्ठता के संबंध में प्रकट होती तो मैं उसे आंशिक श्रेष्ठता ठहराता था, किन्तु बाद में जब ख़ुदा तआला की वह्यी वर्षा की भांति मुझ पर उतरी, उसने मुझे इस आस्था पर क़ायम न रहने दिया तथा स्पष्ट तौर पर मुझे नबी की उपाधि दी गई किन्तु उस प्रकार से कि एक दृष्टि से नबी तथा एक दृष्टि से उम्मती..... ख़ुदा की इस प्रचुरता के साथ वह्यी एवं परोक्ष की बातों में इस उम्मत में मैं ही एक व्यक्ति विशेष हूं और मुझ से पूर्व जितने वली, अब्दाल और क़ुतुब इस उम्मत में हुए हैं उन्हें इस ने'मत का यह प्रचुर भाग प्रदान नहीं किया गया। अत: इस कारण नबी का नाम पाने के लिए मैं ही विशेष्य किया गया और अन्य समस्त लोग इस नाम को पाने के अधिकारी नहीं, क्योंकि वह्यी की प्रचुरता तथा परोक्ष की बातों की अधिकता इस के लिए शर्त है। और वह शर्त उनमें नहीं पाई जाती।" (हक़ीक़तुल वह्यी जिल्द 22 पृष्ठ 30 हाशिया, पृष्ठ 503, पृष्ठ 154 हाशिया, पृष्ठ 153,154, पृष्ठ 406, 407) (सिलसिला अहमदिया पृष्ठ 107-110)

☆ ☆ ☆

डेली करेंट अफेयर्स सितम्बर 2022 (गूगल के माध्यम से)

प्रश्न 1:- हाल ही में कौनसी राज्य सरकार नवजात बच्चों की मौतों को रोकने के लिए पोर्टेबल उपकरण 'SAANS' का उपयोग करेगी ?

उत्तर- असम।

प्रश्न 2: भारत में पहला समाचारपत्र की शुरुआत किसने की थी ?

उत्तर : सैयद अहमद खाँ

प्रश्न 3: लोदी वंश का अंतिम शासक का क्या नाम था ?

उत्तर : इब्राहिम लोदी

प्रश्न 4: बौद्ध धर्म किसके शासन काल में दो भागों-हीनयान तथा महायान में बँट गया था ?

उत्तर : कनिष्क

प्रश्न 5:- हाल ही में SC ने IOA के संविधान में संशोधन के लिए किसे नियुक्त किया है ?

उत्तर- एल नागेश्वर राव।

प्रश्न 6:- किस राज्य की विधानसभा में हाल ही में महिला विधायकों के लिए एक दिन आरक्षित किया गया ?

उत्तर- उत्तर प्रदेश।

प्रश्न 7:- हाल ही में विश्व बैंक ने किस राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ाने के लिए 350 मिलियन USD के ऋण को मंजूरी दी है ?

उत्तर- गुजरात।

प्रश्न 8:- भारत और किस देश के कोस्ट गार्ड ने हाल ही में चेन्नई तट पर संयुक्त अभ्यास किया है ?

उत्तर- अमेरिका।

प्रश्न 9:- हाल ही में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड ने लोक मंथन कार्यक्रम के तीसरे संस्करण का उद्घाटन कहाँ पर किया है ?

उत्तर- गुवाहाटी।

प्रश्न 10:- कौनसा राज्य हाल ही में अपनी स्वयं की स्वास्थ्य बीमा योजना 'CMHIS' शुरू करेगा ?

उत्तर- नागालैंड।

प्रश्न 11:- हाल ही में ICC T20I बल्लेबाज़ी रैंकिंग में कौन शीर्ष पर रहे हैं ?

उत्तर- मोहम्मद रिजवान।

प्रश्न 12:- सरकार ने हाल ही में 'PM CARES Fund' का नया ट्रस्टी किसे नियुक्त किया है ?

उत्तर- रतन टाटा।

प्रश्न 13:- चीन को पछाड़कर कौनसा देश हाल ही में श्रीलंका के सबसे बड़े ऋणदाता के रूप में उभरा है ?

उत्तर- भारत।

प्रश्न 14:- खट्टे फलों में कौन सा एसिड होता है?

उत्तर: साइट्रिक एसिड

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ
الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ (النحل:11)
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO JUICEPAK
Marie
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

R
REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal.com
flipkart.com
amazon.com
paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

Is Allah not sufficient for HIS servant

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone. Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan

Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

पृष्ठ 20 का शेष

हमें युद्ध से या हमारी ज़िम्मेदारियों से मुक्त नहीं करेगा। इस प्रकार सभी शांतिपूर्ण लोगों को अपनी सरकारों पर दबाव डालना चाहिए। और निश्चित रूप से सभी राजनेताओं और प्रभाव के आंकड़े को इस पर प्रतिबिंबित करना चाहिए और अपने क्षेत्रों में न्याय को बढ़ावा देकर विश्व शांति को स्थापित और विनाश को पूरी तरह से रोकने के लिए ठोस कार्रवाई करके दुनिया में शांति तलाश करनी चाहिए अगर हम विश्व को बचाना चाहते हैं तो सच्चे न्याय को समाज के हर स्तर पर दिखाना चाहिए और विश्व में आने वाली समस्याएं एक निष्पक्ष तरीके से हल होनी चाहिए जो निराशा को समाप्त कर दें। किसी भी देश के धन को लालच की दृष्टि से नहीं देखना चाहिए और एक दूसरे की मदद करने के लिए आपसी नीतियां बनानी चाहिए।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि दुनिया को यह पता होना चाहिए कि वे अपने सृष्टिकर्ता को भूल चुके हैं और उन्हें वापस उसकी ओर जाना है। जब ऐसा होगा केवल तभी सच्चा अमन कायम हो सकता है और इसके बिना अमन की कोई गारंटी नहीं है। मैंने पहले भी कई बार एक वैश्विक युद्ध के भयानक परिणामों के बारे में बात की है और यह सिर्फ ऐसे युद्ध के बाद होगा कि दुनिया यह महसूस करेगी कि अन्याय पूर्ण नीतियों के विनाशकारी परिणाम सिर्फ अपने व्यक्तिगत महत्त्वकांक्षाओं और निहित स्वार्थों को संतुष्ट करने के लिए बनाए गए हैं। मैं आशा करता हूं और दुआ करता हूं कि ऐसी आफ़त के आने से पहले दुनिया होश में आ जाए। मैं आशा करता हूँ और दुआ करता हूँ कि दुनिया अपने पैदा करने वाले को पहचाने, और क़ुबूल करे। धन्यवाद।

.....